कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 22 सितम्बर 2025 वर्ष-80 अंक - 4 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

पढ़िये...

5

छोटे दानों वाले अनाज की कृषि में भूमिका

6

मेथी की स्मार्ट खेती

देश का पहला पीएम मित्र पार्क किसानों के लिए नई उम्मीद

धार (कृषक जगत)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रदेश के धार जिले में देश के पहले और सबसे बड़े पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि यह पार्क कपास उगाने वाले किसानों के लिए एक बड़ा अवसर लेकर आया है। इस पार्क में कपास से लेकर कपड़ा बनाने की पूरी प्रक्रिया एक ही स्थान पर होगी, जिससे किसानों को उनकी फसल का अच्छा दाम मिलेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस पार्क से मध्यप्रदेश के कपास उत्पादक किसानों को लाभ होगा। कपड़ा उद्योग की पूरी वैल्यू चेन फार्म टू फाइबर, फाइबर टू फैक्ट्री, फैक्ट्री टू फैशन, फैशन से फॉरेन यहीं विकसित की जाएगी। इससे 3 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा ।

प्रधानमंत्री श्री मोदी धार जिले की बदनावर तहसील के भैंसोला गांव में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने में किसानों का योगदान सबसे अहम है। टेक्सटाइल उद्योग में किसान की उपज कपास का उपयोग होने से गांवों की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और किसान को फसल की अच्छी कीमत मिलेगी। साथ ही आपने राष्ट्रीय 'स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार' महाअभियान, आठवें 'राष्ट्रीय पोषण माह', 'आदि सेवा पर्व' का शुभारंभ कर 'सुमन सखी चैटवॉट' को लाँच किया। श्री मोदी ने मातृ वंदना योजना में देशभर की 15 लाख से अधिक महिलाओं को 450 करोड़ रूपए से अधिक की प्रसूति सहायता राशि खाते में डाली।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री द्वारा देश के पहले पीएम मित्र पार्क की नींव म.प्र. में रखी जा रही है। पीएम मित्र पार्क से प्रदेश के मालवा-निमाड़ अंचल में किसानों की फसल कपास को प्रोत्साहन मिलेगा। कपास से धागा, धागे से कपड़ा और कपड़े के निर्यात से म.प्र.वस्त्रोद्योग का वैश्विक केंद्र बनेगा।

धार में प्रधानमंत्री ने किया शिलान्यास

धार में पीएम मित्र पार्क के शिलान्यास अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का स्वागत करते हुए राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा एवं केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर उपस्थित थीं।

खास बातें

- **पीएम मित्र पार्क में कपास से कपड़ा बनाने तक की पूरी प्रक्रिया**
- **कपास उत्पादकों को लाभ • स्थानीय किसान फसल सीधे उद्योग को बेच सकेंगे • कृषि आधारित रोजगार • स्वदेशी वस्तुएं अपनाने की अपील**

प्रदेश में खाद आपूर्ति पर सरकार का फोकस, किसानों की चिंता बरकरार

भोपाल (कृषक जगत)। खरीफ और रबी दोनों सीजनों में खाद की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने को लेकर मध्यप्रदेश सरकार पूरी तरह सतर्क है। मुख्यमंत्री ने साफ निर्देश दिए हैं कि किसी भी जिले में उर्वरक वितरण में गड़बड़ी पाई गई तो कलेक्टर तक को जवाबदेह ठहराया जाएगा। केंद्र से निर्धारित कोटे की आपूर्ति समय पर मिले, इसके लिए राज्य लगातार संवाद कर रहा है। उर्वरक स्टॉक की ऑनलाइन निगरानी की जा रही है और सहकारी समितियों तथा निजी डीलरों को चेतावनी दी गई है कि काला बाज़ारी या जमाखोरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

फिर भी, ज़मीनी हकीकत किसानों के लिए कठिनाई भरी बनी हुई है। राज्य में इस समय करीब 3.5 लाख टन यूरिया की कमी बताई जा रही है। मक्का और धान के क्षेत्रफल में बढ़ोतरी तथा सोयाबीन में कमी के कारण खाद की मांग अचानक बढ़ गई है। परिणामस्वरूप कई जिलों में किसानों को लंबी कतारों और टोकन व्यवस्था की खामियों का सामना करना पड़ रहा है।

रीवा की करहिया मंडी में किसानों ने रातभर इंतज़ार कर अधिकारियों को घेर लिया। भिंड के लहार क्षेत्र में खाद वितरण के दौरान पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। छिंदवाड़ा में किसानों ने सड़क पर उतरकर विरोध जताया, जबकि श्योपुर समेत कई जिलों में भी प्रदर्शन दर्ज हुए।

सरकारी दावे और किसानों की पीड़ा के बीच स्थिति साफ करती है कि खाद आपूर्ति सिर्फ आंकड़ों में पूरा दिखाने से काम नहीं चलेगा। ज़रूरी है कि वितरण व्यवस्था गाँव-गाँव तक सही तरीके से पहुँचे।

इस बार राज्य को पिछले साल से अधिक मात्रा में यूरिया उपलब्ध कराया गया है, फिर भी वितरण व्यवस्था में खामियाँ मिल रही हैं। 'खाद उपलब्धता की समीक्षा करें, वास्तविक स्टॉक किसानों को भी पता होना चाहिए। यदि डीलर या स्टेशन पर गड़बड़ी पायी जाती है, तो कलेक्टर जवाबदेह होंगे।'

- डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, म.प्र.

वर्ष 2025-26 में 362 मिलियन टन से अधिक उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित : श्री शिवराज सिंह

राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-रबी अभियान -2025'

(निमिष गंगराड़े)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-रबी अभियान -2025' में वर्ष 2025-26 के लिए 362.50 मिलियन टन उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, यह जानकारी दिल्ली में केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने दी। श्री चौहान ने बताया कि देश का कुल खाद्यान्न उत्पादन वर्ष 2024-25 में 353.96 मिलियन टन तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष के मुकाबले 21.66 मिलियन टन (6.5 प्रतिशत) अधिक है। धान, गेहूं, मक्का, मूंगफली व सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों में रिकॉर्ड उत्पादन दर्ज किया है। निर्धारित लक्ष्य 341.55 मिलियन टन से यह 12.41 मिलियन टन अधिक है।

6 अहम विषयों पर चर्चा

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि सम्मेलन के पहले दिन छह विषयों पर अलग-अलग समूहों में केंद्र और राज्यों के वरिष्ठ कृषि अधिकारियों ने विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि अब अलग-अलग राज्यों का रोडमैप वहां कृषि को विकसित करने के लिए वहीं कार्यशाला करके तय किया जाएगा। उन्होंने बताया कि दो दिवसीय इस सम्मेलन में जिन विषयों पर चर्चा हुई, उनमें शामिल हैं- जलवायु सहनशीलता, गुणवत्तापूर्ण बीज-उर्वरक-कीटनाशक, बागवानी, प्राकृतिक खेती, प्रभावी प्रसार सेवाएं और कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका, केंद्र प्रायोजित योजनाओं का समन्वय।

दलहन-तिलहन की उत्पादकता बढ़ाने और एकीकृत कृषि प्रणाली को लेकर भी विस्तार से बातचीत हुई है। केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन के साथ देश में फल और सब्जियों के उत्पादन में भी पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अच्छी बढ़ोतरी हुई है।

250 लाख मीट्रिक टन बीज उपलब्ध

केंद्रीय कृषि मंत्री ने बाढ़ प्रभावित राज्यों की स्थिति को लेकर भी चर्चा की और कहा कि सरकार की तरफ से पीड़ितों की मदद के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो राज्य प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत कवर है, पूरी कोशिश है कि वहां किसानों को बीमा राशि का उचित और त्वरित लाभ मिल सके। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि रबी फसल के लिए पर्याप्त मात्रा में बीज उपलब्ध है। बुवाई के लक्ष्य के तहत 229 लाख मीट्रिक टन बीज की आवश्यकता है, हमारे पास 250 लाख मीट्रिक टन के करीब बीज उपलब्ध है।

उर्वरक की पूरी आपूर्ति होगी

खाद और उर्वरक को लेकर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वर्षा एवं अन्य परिस्थितियों के कारण क्रॉप पैटर्न में बदलाव आता है। इस साल वर्षा अच्छी मात्रा में हुई है, जिस कारण बुवाई के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। खाद की अतिरिक्त मांग की यह वजह भी हो सकती है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि खाद और उर्वरक की पूरी आपूर्ति की जाएगी, राज्यों की मांग के आधार पर जितनी भी आवश्यकता होगी, खाद उपलब्ध करवाया जाएगा। इसके लिए रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय से लगातार संपर्क है।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान'

केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि रबी फसल के लिए 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' पिछली बार की ही तरह इस बार भी चलाकर वैज्ञानिकों की दो हजार से अधिक टीमें गांव-गांव भेजी जाएंगी, जो किसानों को समुचित जानकारी देगी। इन टीमों में केंद्र और राज्यों के कृषि विभाग के अधिकारी, कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक रहेंगे, साथ ही कृषि विश्वविद्यालयों, एफपीओ एवं प्रगतिशील किसानों का भी इनमें प्रतिनिधित्व होगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि देश में धान और गेहूं का उत्पादन वैश्विक स्तर का है, वहीं दलहन और तिलहन में उत्पादन बढ़ाने के लिए अभी और प्रयास की आवश्यकता है। इस दिशा में आगे रोडमैप बनाकर काम किया जाएगा। प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। उन्होंने राज्यों में फसलवार चर्चा को लेकर बताया कि अब तक कपास और सायोबीन में उत्पादन बढ़ाने को लेकर वृहद स्तर पर बैठकें की गई हैं, आगे रबी फसल अभियान व उसके बाद विभिन्न अन्य फसलों के उत्पादन में वृद्धि को लेकर ठोस कदम उठाए जाएंगे।

कृषि आदान

रबी अभियान 2025' में समूह दो ने 'गुणवत्तापूर्ण इनपुट जैसे—बीज (साथी पोर्टल), उर्वरक, कीटनाशक, खेती की जाँच-परख आदि' विषय पर विस्तृत चर्चा की, जिसे **श्री मुक्तानंद अग्रवाल, संयुक्त सचिव (PP)** द्वारा मोडरेट किया गया। इस सत्र में किसानों तक गुणवत्तापूर्ण इनपुट समय पर और पारदर्शी तरीके से पहुँचाने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया गया। साथ ही, बीज वितरण को डिजिटल प्लेटफॉर्म 'साथी पोर्टल' के जरिए और आसान बनाने, उर्वरक व कीटनाशकों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और खेती की जाँच-परख (ट्रेसबिलिटी) प्रणाली को मजबूत करने पर चर्चा हुई। इस मौके पर अलग-अलग राज्यों से आए अधिकारियों ने भी अपने अनुभव और सुझाव साझा किए, ताकि इन प्रयासों को ज़मीनी स्तर पर और बेहतर तरीके से लागू किया जा सके।

प्राकृतिक खेती

रबी अभियान 2025' में देशभर से आए अधिकारियों के अनुभवों को सुनने और समझने के लिए सभी प्रतिभागियों को 6 समूहों में बांटा गया और प्रत्येक समूह को अलग-अलग विषय दिए गए। पहले समूह ने 'जलवायु अनुकूल - प्राकृतिक खेती, मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता तथा उर्वरकों का संतुलित उपयोग' विषय पर विस्तृत चर्चा की, जिसे **संयुक्त सचिव (INM) श्री फ्रैंकलिन एल. खोबुंग** द्वारा मोडरेट किया गया। इस सत्र में सतत् कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने, मृदा स्वास्थ्य सुधारने और उर्वरकों के संतुलित उपयोग व जलवायु अनुकूल कृषि को सशक्त बनाने जैसे अत्यंत आवश्यक विषयों पर विभिन्न राज्यों से आए अधिकारियों ने भी अपने विचार और अनुभव साझा किए।

दलहन और तिलहन

रबी अभियान 2025' में समूह तीन ने 'फसलों का विविधीकरण, विशेषकर दलहन और तिलहन' विषय पर विस्तृत चर्चा की, जिसे **संयुक्त सचिव, श्री अंबालगन पी.** द्वारा मोडरेट किया गया। इस सत्र में किसानों के लिए फसल विविधीकरण के महत्व, दालहन और तिलहन फसलों की पैदावार बढ़ाने की रणनीतियां, नई तकनीकें और सरकारी योजनाओं के लाभ पर विचार-विमर्श किया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि विविधीकरण न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और कृषि में जोखिम कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बागवानी

रबी अभियान 2025' में समूह चार ने 'हॉर्टिकल्चर का विविधीकरण' विषय पर विस्तृत चर्चा की, जिसे **श्री प्रिय रंजन, संयुक्त सचिव (बागवानी)** द्वारा मोडरेट किया गया। इस सत्र में विशेषज्ञों ने हॉर्टिकल्चर में विविधीकरण के महत्व, नई तकनीकियों, फसल प्रबंधन के तरीके और सरकारी योजनाओं के लाभ पर विचार-विमर्श किया। सत्र में यह भी बताया गया कि फलों, सब्जियों और फूलों की विविध फसलें न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक हैं, बल्कि पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने और कृषि में जोखिम कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

बढ़ते धान के रकबे ने बढ़ाया प्रदेश में मेलिओइडोसिस रोग का खतरा

धान किसानों को अधिक सचेत रहने की जरूरत

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश में धान का रकबा बढ़ रहा है। इस वर्ष खरीफ में कुल 36 लाख हेक्टेयर से अधिक धान की बोनी की गई है परन्तु इस वर्ष धान किसानों को अधिक सावधान रहने की जरूरत है। एम्स के डॉक्टरों ने एक ऐसी बीमारी को लेकर बड़ा खुलासा किया है। एम्स भोपाल ने मेलियोइडोसिस नामक संक्रामक रोग को लेकर एक रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रदेश में धान का रकबा बढ़ने और पानी के स्रोत अधिक होने से इस बीमारी का संक्रमण बढ़ रहा है। बताया गया है कि प्रदेश के 20 से अधिक जिलों में 'मेलिओइडोसिस' से प्रभावित रोगियों की पुष्टि हुई है। विशेषत: धान के खेतों की संक्रमित मिट्टी में पाए जाने वाले बैक्टीरिया से होने वाले इस रोग के संबंध में समय पर पहचान और उपचार के संबंध में एम्स भोपाल द्वारा प्रशिक्षण-सत्र आयोजित किए गए हैं।

अब तक 130 केस मिले

रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में अब तक 130 से ज्यादा मेलियोइडोसिस के मरीज पाए गए हैं। यह रोग खतरनाक है, समय पर सही इलाज न मिलने पर घातक हो जाता है।

मेलिओइडोसिस बीमारी के लक्षण

'मेलियोइडोसिस' एक संक्रामक बीमारी है जो 'बर्कहोल्डरिया स्यूडोमैली' नामक बैक्टीरिया से होती है। यह बैक्टीरिया आम तौर पर मिट्टी और पानी में पाया जाता है। बीमारी के प्रमुख लक्षण लंबे समय तक बुखार या बार-बार बुखार आना, लगातार खांसी, टीबी जैसी हो सकती है। सांस लेने या सामान्य गतिविधि के दौरान सीने में दर्द होना और टीबी समझकर शुरू किए गए इलाज के बावजूद लक्षण में सुधार न होना है। इस बीमारी का सबसे अधिक खतरा खेती-किसानी से जुड़े लोगों को हो सकता है, क्योंकि उनका सीधा संपर्क मिट्टी और पानी से होता है। इस बीमारी की तत्काल जांच के साथ उपचार एवं सावधानी रखकर बचाव किया जा सकता है।

म.प्र. के धान बाहुल्य जिले

बालाघाट, कटनी, जबलपुर, रीवा, सिवनी, मण्डला, सीधी, सतना, शहडोल, रायसेन, होशंगाबाद, सिंगरौली, डिण्डोरी, दमोह, अनूपपुर, पन्ना, दतिया, ग्वालियर, नरसिंहपुर एवं उमरिया हैं।

सतर्क रहने की जरूरत

डॉक्टरों ने कहा कि यह बीमारी अब प्रदेश में क्षेत्रीय बीमारी का रूप ले चुकी है। संस्थान ने डॉक्टरों और आम जनता दोनों से अपील की है कि लंबे समय तक ठीक न होने वाले बुखार और टीबी जैसे लक्षणों को हल्के में न लें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लिया संज्ञान

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने धान किसानों की चिंता करते हुये टीबी जैसे लक्षणों वाले घातक रोग 'मेलिओइडोसिस' की रोकथाम के उपाय किये जाने पर गंभीर रूख अपनाया है। उन्होंने इस संबंध में प्रमुख सचिव स्वास्थ्य और कृषि विभाग को साथ मिलकर जांच और उपचार रोकथाम के लिए कार्रवाई करने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि संभावित और प्रभावित क्षेत्रों में इन प्रकरणों की जांच करें। इसकी रोकथाम के लिए कृषकों को सजग और जागरूक करें। यदि कोई कृषक या व्यक्ति चिन्हांकित होता है, तो उसके समुचित उपचार के प्रबंध सुनिश्चित करें।

कृषि यंत्रों का उपयोग कर नरवाई जलाने की घटना रोकें : श्री कंषाना

फसल अवशेष प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश के कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि किसान भाई नरवाई से जुड़े सभी कृषि यंत्रों का उपयोग करें, जिससे प्रदेश में फसल अवशेष जलाने की घटनाएं नियंत्रित हो सकें। उन्होंने भोपाल में आयोजित फसल अवशेष प्रबंधन पर एक दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का शुभारम्भ किया।

कृषि मंत्री ने कहा कि फसल अवशेष जलाने की घटनाओं को नियंत्रित कर वायु प्रदूषण कम किया जा सकता है।

मृदा में कार्बनिक पदार्थ बढ़ाने से फसल के उत्पादन में वृद्धि होती है। प्रदेश में किसानों को समझाईश देकर उत्पादन लागत कम कर आय बढ़ाने का कार्य चल रहा है। फसल अवशेषों का समुचित उपयोग कर कृषकों की अतिरिक्त आय के विकल्प उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

कार्यशाला में कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक बर्णवाल, सचिव कृषि श्री निशांत वरबड़े, कुलगुरु कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर श्री अरविंद शुक्ला, मुख्य महाप्रबंधक नाबार्ड श्रीमती एस. सरस्वती, निदेशक सीफेट लुधियाना डॉ. नचीकेत कोतवालीवाले, निदेशक सीआईएई भोपाल डॉ. सीआर मेहता, कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय के अधिकारीगण, देश एवं प्रदेश से आए वरिष्ठ अधिकारी एवं विशेषज्ञगण, नरवाई प्रबंधन से जुड़े यंत्रों के निर्माता बंधु उपस्थित थे।

अलीराजपुर अब हुआ 'आलीराजपुर'

भोपाल (कृषक जगत)। राज्य शासन ने जिला अलीराजपुर का नाम बदल कर आलीराजपुर करने की अधिसूचना जारी की है। राजस्व विभाग द्वारा जारी नई अधिसूचना के अनुसार जिला अलीराजपुर का नाम अब 'आलीराजपुर' होगा। यह निर्णय गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा गत 21 अगस्त 2025 को जारी अनापत्ति पत्र के आधार पर लिया गया है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

थोड़ा जोते, बहुत है गावै, ऊंच न बांधे आड़।
ऊंचे पर खेती करे, पैदा होवे भाड़।।

जी.एस.टी. सुधार... कीमतें बढ़ाकर लाभ देने का कुचक्र की आशंका !

आज सोमवार, 22 सितम्बर से पावन नवरात्रि पर्व की शुरुआत होने के साथ ही वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.) की नई दरें भी लागू हो रही हैं। जीएसटी सुधारों से किसानों को खेती की लागत कम होने, बेहतर दाम मिलने, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और खेती-किसानी को आधुनिक बनाने में मदद मिलेगी। उर्वरकों, कीटनाशकों, ट्रैक्टरों और कृषि उपकरणों पर टैक्स दरें कम की गई हैं, जिससे किसानों के लिए इन वस्तुओं को खरीदना सस्ता होगा। साथ ही, डेयरी उत्पादों, शहद और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों पर भी टैक्स दरें कम करने से उनकी आय में वृद्धि होगी और इससे सम्बंधित उद्योगों को बल मिलेगा। अब केंद्र और राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है कि किसानों को उर्वरकों, कीटनाशकों, ट्रैक्टरों और कृषि उपकरणों आदि वस्तुएं कम की गई नई कीमतों पर ही मिले। हालांकि इस सम्बंध में शक्रवार, 18 सितम्बर को नई दिल्ली में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में कृषि मशीनरी के लिए नवीनतम जीएसटी सुधारों पर चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। श्री चौहान ने बताया कि केंद्र सरकार किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित करने, उत्पादकता बढ़ाने और लागत कम करने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध है और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मशीनीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि जी.एस.टी. सुधारों से किसानों को होने वाले फायदों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न संचार माध्यमों से व्यापक प्रचार - प्रसार कर जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि अगले महीने 3 अक्टूबर से 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का दूसरा चरण शुरू हो रहा है। इस अभियान के दौरान भी किसानों को जीएसटी दरों में की गई कटौती की जानकारी दी जाएगी, ताकि वे उन्नत खेती के लिए इसका अधिकतम उपयोग कर सकें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कस्टम हायरिंग केन्द्रों को कम कीमतों पर मशीनें मिलने से किसानों को भी कम किराए पर कृषि उपकरण मिलने चाहिए । जी.एस.टी. की नई कीमतें आज से प्रभावी हो रही हैं । इसके तहत ट्रैक्टर 35 एचपी 41,000 रुपये, ट्रैक्टर 45 एसपी पर 45,000 रुपये, ट्रैक्टर 50 एचपी 53,000 रुपये और ट्रैक्टर 75 एचपी पर 63,000 रुपये सस्ता हो जाएगा। पावर वीडर- 7.5 एचपी की कीमत अब 5,495 रुपये कम हो गई है। इसी तरह सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल- 11 टाइन 10,500 रुपये, सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल - 13 टाइन 3,220 रुपये, हार्वेस्टर कंबाइन 4,375 रुपये और 14 फीट कटर बार के दाम 1,87,500 रुपये कम हो जाएंगे। इसके अलावा स्ट्रॉ रीपर- 5 फीट 21, 875 रुपये, सुपर सीडर- 8 फीट 16,875 रुपये, हैप्पी सीडर- 10 टाइन 10,625 रुपये, रोटावेटर- 6 फीट 7,812 रुपये, स्क्वायर बेलर- 6 फीट 93,750 रुपये, मल्चर- 8 फीट 11,562 रुपये, न्यूमैटिक प्लांटर- 4 पंक्ति 32,812 रुपये और ट्रैक्टर माउंटेड स्प्रेयर- 400 लीटर क्षमता वाला 9,375 रुपये सस्ता मिलेगा। धान रोपण यंत्र (4 पंक्ति- वॉक बिहाइंड) पर 15,400 रुपये तथा 4 टन प्रति घंटा क्षमता वाला बहुफसली थ्रेसर अब 14,000 रुपये सस्ता हो गया है। केंद्रीय कृषि मंत्री ने आशंका जतायी है कि जीएसटी सुधार के तहत कम हो रही कीमतों लाभ किसानों को दिलाने में बिचौलिए भी सक्रिय हो सकते हैं। यह आशंका सही है क्योंकि जी.एस.टी. की कम हुई कीमतों के बारे में सही और पूरी जानकारी सम्भवतः अधिकांश किसानों तक नहीं पहुंची होगी। हालांकि सोशल मीडिया के इस दौर में कुछ ही समय में कोई भी जानकारी / सूचना का प्रसार हो जाता है लेकिन जो जानकारी / सूचना प्राप्त हो रही है, वह प्रामाणिक ही है, इस पर निगरानी आवश्यक है और यह कार्य सरकारी अमले को ही करना होगा। इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विभाग और पंचायतों के साथ किसान उत्पादक संघों (एफ.पी.ओ.) को सक्रिय करना होगा ताकि किसी भी तरह का भ्रम न हो और जी.एस.टी. सुधार के जरिये किसानों को सही कीमतों पर उर्वरक, कीटनाशक, ट्रैक्टर और कृषि उपकरण आदि मिलना सुनिश्चित हो। यह भी आशंका जताई जा रही है कि जिन वस्तुओं की कीमतें कम की गई हैं, उनकी कीमतें बढ़ा दी जाएंगी और निर्धारित दर कम करने पर भी उपभोक्ताओं को कोई लाभ नहीं होगा। इस पर भी सरकार को ध्यान देना होगा अन्यथा जी.एस.टी. सुधार केवल कागजों पर ही वाहवाही लूटने का मात्र ज़रिया बन कर रह जाएगा।

हिमाचल : खतरे में जीवन

● कुलभूषण उपमन्यु

विकास सूचकांक में आगे हिमाचल प्रदेश गत वर्षों में लगातार प्राकृतिक आपदाओं से घिरता जा रहा है। बादल फटने की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। जहां 2018 में बादल फटने की 21 घटनाएं हुईं, वहीं 2019 में 16, '20 में 3, '21 में 30, '22 में 39, '23 में 65 और 2024 में 57 घटनाएं हुईं। अभी बरसात के आरंभिक चरण में ही 14 से ज्यादा जगह बादल फटा है और 69 लोग अकाल मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं। अभी असली बरसात तो शेष है। आगे क्या होगा, यह सोचकर ही दिल दहल जाता है।

क्या कारण है कि प्रकृति हिमाचल प्रदेश पर इतनी नाराज है, जबकि उत्तराखंड का हाल भी अच्छा नहीं है। इसका अर्थ हुआ कि हिमालय में सब जगह ही प्रकृति क्रुद्ध हो चुकी है। बादल फटने की घटना का अर्थ है- एक छोटे 20-30 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बादलों का सघन होकर एक घंटे में 10 सेंटीमीटर से ज्यादा बारिश हो जाना। मंडी में दुर्घटना वाले दिन 21 सेंटीमीटर से ज्यादा बारिश रिकॉर्ड हुई है। इससे भीषण बाढ़ और भूस्खलन की स्थितियां बन गईं। जाहिर है, ये घटनाएं वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण हो रही हैं। चिंता की बात यह है कि हिमालय में औसत से ज्यादा तापमान वृद्धि हुई है। इसी कारण लगातार हिमाचल प्रदेश में बादल फटने की घटनाएं साल-दर-साल बढ़ती जा रही हैं।

हिमाचल प्रदेश में ढांचागत विकास और बड़ी परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर वनभूमियों का भूमि उपयोग बदला गया है, वन-संपदा घटी है और तोड़-फोड़ बढ़ी है। इसके चलते हिमालय की नाजुक धरती भारी बारिश का दबाव न झेल सकने के कारण भूस्खलन का शिकार हो रही है और अभूतपूर्व तबाही का कारण बन रही है। चीन और अमेरिका के बाद भारत तीसरा सबसे बड़ा वायु-प्रदूषणकर्ता देश बन गया है जिसके 'ग्रीन-हाउस' प्रभाव के कारण तापमान में वृद्धि हो रही है। हिमालय में औसत से ज्यादा तापमान-वृद्धि पर्यटन और अन्य कारणों से बढ़ती परिवहन की भीड़ के कारण पैदा हुए प्रदूषण से हो रही है। पहाड़ों की संकरी घाटियों में प्रदूषित वायु अटक जाती है और शायद यह भी तापमान बढ़ने का कारक हो सकता है।

हिमालय में जारी विनाश की वजह क्या सिर्फ भगवानजी की बरसाई जा रही आपदा या 'जलवायु - परिवर्तन' भर है? क्या इसमें हम इंसानों की भी कोई भागीदारी है? जैसे ऊर्जा, बाढ़-नियंत्रण और सिंचाई के कथित लाभों के लिए इफरात में ताने जा रहे बड़े बांधों से पैदा होती मीथेन गैस और उससे बढ़ता तापक्रम बादल फटने की वजह बनते हैं। या अपने 'इहलोक' और 'परलोक' संवारने के लिए बढ़ता अंतहीन पर्यटन मौसम को गर्म करता है और नतीजे में भारी-से-भारी बरसात होती है। क्या है, इन सबकी भूमिका?

हिमाचल प्रदेश के बांधों में बहकर आने वाला मलबा अपने साथ जैविक पदार्थ भी लाता है, जो झीलों के तल में बैठ जाते हैं। ये जैविक पदार्थ जब बिना आक्सीजन के सड़ते हैं तो मीथेन गैस पैदा होती है। मीथेन कार्बन डाई-आक्साइड की तुलना में 28 से 64 गुना ज्यादा 'ग्रीन हॉउस' प्रभाव पैदा करती है। यह भी औसत से ज्यादा तापमान वृद्धि का कारण हो सकता है। इस मुद्दे को गहन वैज्ञानिक शोध की जरूरत है। अमेरिकी लेखक पीटर ब्रेविट ने अपनी पुस्तक 'सेम रिवर ट्विस' में बांध की झीलों से जैविक पदार्थों के आक्सीजन-रहित अपघटन से मीथेन गैस पैदा होने की पुष्टि की है। इसके चलते ही अमेरिका में वर्जीनिया की रेपानहौक नदी पर अम्ब्रे बांध को हटाया गया था और नतीजे में मीथेन उत्सर्जन में कमी दर्ज की गई थी। 'नासा' के मैथ्यू जॉनसन की 2021 की शोध के अनुसार विश्व में 3 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र बांधों की झीलों के नीचे है जिसमें 10.1 टेराग्राम (10 अरब 10 लाख किलो) मीथेन हर वर्ष पैदा होती है। हालांकि पुराने अनुमान के अनुसार यह मात्रा 70 टेराग्राम मानी गई है।

फोरलेन सड़कों के कारण होने वाली तोड़फोड़ और बढ़ती सड़क कनेक्टिविटी के कारण होने वाले निर्माण कार्यों में पर्वतों की विशिष्ट तकनीक का अभाव है। खासकर ठेकेदारी प्रथा के चलते डंपिंग कार्य में भारी कोताही बरती जा रही है। बांध प्रबंधन में भी लापरवाही देखने में आई है। कहीं बाढ़ के समय बांध के गेट ही नहीं खुलते हैं और कहीं बाढ़-नियंत्रण के लिए बांध में समय रहते, बाढ़ के पानी को रोकने योग्य जगह ही (समय पर पानी छोड़कर) खाली नहीं की जाती। इससे बाढ़ का पानी रोका नहीं जा सकता और तत्काल अचानक छोड़ना पड़ता है, जिससे सामान्य से ज्यादा बाढ़ आ जाती है।

इन सब लापरवाहियों के चलते हिमाचल प्रदेश का जीवन खतरे में घिरता जा रहा है, जिसका प्रभाव पर्यटन पर भी बुरा पड़ेगा। पर्यटन विकास के लिए ठंडा मौसम, सुंदर पर्वतीय वृक्ष, वनस्पतियों से भरी ढलानें और पर्याप्त बर्फ जरूरी तत्व हैं। बाकी आवास अदि सुविधाएँ तो बाद में आती हैं। पर्यटन का बुनियादी आकर्षण ही समाप्त हो जाएगा तो पंचतारा सुविधाएँ भी पर्यटन को बचा नहीं पाएंगी। कुछ तथ्यपूर्ण मान्यताएं हैं जिनको मानकर ही पर्वत पर विशिष्ट विकास योजनाएं बनाई जा सकती हैं जो प्रकृति मित्र और टिकाऊ विकास लाने वाली हों।

हिमालय पूरे देश के लिए सदानीरा नदियां देने वाला और जलवायु निर्धारित करने वाला क्षेत्र है। वह नाजुक, अगम्य और हाशिए पर है। इसके वनों और हिमनदों की रक्षा करना देशहित का कार्य है। हिमाचल प्रदेश में पर्यटन जैसे पर्यावरण मित्र विकास को टिकाऊ बनाने के लिए सारे विकास मॉडल को पर्यावरण मित्र बनाना पड़ेगा। तोड़फोड़ वाले विकास के विकल्प तलाशने होंगे। वाहन प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में सुधार करना होगा। इलेक्ट्रिक वाहन, हाइड्रोजन वाहन और 'रज्जू मार्गों' (रोप-वे) को मुख्यधारा परिवहन व्यवस्था का भाग बनाना होगा।

बड़ी जलविद्युत परियोजनाएं उपयुक्त नहीं हैं, उनके विकल्प ढूँढने होंगे। झीलों से मीथेन पैदा होती है। हिमालय में 'स्माल इस ब्यूटीफुल' के सिद्धांत पर विकास करना होगा। हिमालय की राष्ट्रीय स्तर पर दी जाने वाली पर्यावरणीय सेवाओं को मान्यता देते हुए ये सेवाएं सतत देते रहने की शक्ति को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर योजना निर्माण और क्रियान्वयन की जिम्मेदारी लेनी होगी। इस दिशा में सोचकर योजना निर्माण होगा, तभी हिमाचल प्रदेश और हिमालयी राज्यों में पर्यावरण मित्र विकास का युग आरंभ हो सकेगा, हिमालय में रहने वाले लोगों का जीवन भी सुरक्षित हो सकेगा और देश के लिए जीवनदायी हवा, पानी और मिट्टी के निर्माण और संरक्षण की हिमालयी व्यवस्थाएं बची रहेंगी। (सप्रेस)

• डॉ. शैलेन्द्र भलावे • डॉ. धनंजय कठल
• डॉ. आर. एस. सोलंकी
कृषि महाविद्यालय, बालाघाट
dkathal@gmail.com

छोटे दानों वाले अनाज की कृषि में भूमिका

राजस्थान, जिसे अपनी कठोर और आर्द्र मौसम की वजह से जाना जाता है, वहां कृषि क्षेत्र में बाजरे जैसी परंपरागत फसलों के पुनर्जीवन में एक सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है। बाजरा, जौ और रागी जैसी छोटी-छोटी बीजों वाले घास के पौधे, राजस्थान की अनियमित वर्षा, गर्मी और कम नमी के तत्वों में अच्छी तरह से उगने के लिए उपयुक्त हैं। ये फसलें जल-संरक्षणीय कृषि के लिए अद्वितीय हैं और वातावरणीय लाभ प्रदान करती हैं। राजस्थान की जलवायु के लिए बाजरे की उपयुक्तता कई कारणों से है। यहां का तापमान, अनियमित वर्षा, थोड़ी नमी और सूखापन वाली परिस्थितियों में बाजरे का पौधा परिपक्व होता है। यह फसलें कम पानी में उगने के लिए अधिक अनुकूल होती है और बिना रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के उपरांत भी उच्च उपज प्राप्त करने के लिए मदद करती है। बाजरे की खेती राजस्थान में स्थानीय आहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यहां की जीवंत संस्कृति में बाजरे की रोटी और खिचड़ी जैसे प्रमुख व्यंजनों में शामिल किया जाता है। बाजरे को दलहन या तिलहन जैसी फसलों के साथ संयोजित करती कृषि प्रणाली तकनीकें, मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाती हैं और आय स्रोतों को विविध करती हैं। इसके अलावा, जैविक खेती और बाजरे के प्रसंस्करित उत्पादों के माध्यम से मूल्य संवर्धन की पहलें व्यापकता में बढ़ रही हैं। ये पहले नए बाजार बनाती हैं और किसानों की आय को बढ़ाती है।

ज्वार का उत्पादन देश में लगभग 36.47 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में मुख्यत: महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश एवं गुजरात में किया जाता है। ज्वार को खरीफ एवं रबी दोनों मौसम में उगाया जाता है। खरीफ ज्वार की उत्पादकता 1100-1200 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर एवं रबी ज्वार की उत्पादकता 600-700 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर है। ज्वार को एक बारानी क्षेत्र की फसल माना जाता है। इसीलिए इसका उत्पादन पठारी क्षेत्रों एवं काली मृदा में अधिक होता है।

ऐसे क्षेत्र जहां वार्षिक वर्षा 400 से 1000 मिमी होती है, ज्वार के उत्पादन हेतु उपयुक्त है। यह उत्तरी राज्यों में केवल खरीफ की फसल है। जबकि आंध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में यह खरीफ एवं रबी दोनों सीजन में उगाई जाती है। ज्वार के उत्पादन हेतु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सें.मी. एवं पौधों की संख्या 1.8 से 2.0 लाख प्रति हेक्टर होनी चाहिए। उर्वरक के रूप में 10 टन प्रति हेक्टर कम्पोस्ट एवं 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तथा 40 कि.ग्रा. फॉस्फेट खाद ज्वार उत्पादन हेतु आवश्यक है।

पोषण से भरपूर

छोटे दानों वाले अनाज में पोषण मान गेहूं तथा धान से भी अधिक बेहतर हैं। जैसे कि इन अनाजों में पाया जाने वाला प्रोटीन धान में पाए जाने वाले प्रोटीन की तुलना में बेहतर गुणवत्ता वाला होता है। इन अनाजों में आवश्यक अमीनो अम्ल की गुणवत्ता गेहूं एवं मक्का की तुलना में कहीं अधिक होती है। इन अनाजों में प्रमुख विटामिन जैसे-थायमिन, राइबोफ्लेविन, फोलिक अम्ल तथा नियासिन आदि अच्छी मात्रा में पाये जाते हैं। इन अनाजों के अंर्तगत रागी कैल्शियम का उच्चतम स्रोत है। छोटे दानों वाले अनाज फसलें फॉस्फोरस तथा लौह तत्व का भी अच्छा स्रोत हैं। लस (ग्लूटिन) गेहूं में पाया जाने वाला एक संरचनात्मक प्रोटीन है। लस की उपस्थिति गेहूं के आटे को लोचदार बनाती है। कुछ लोगों का शरीर इस प्रोटीन को पचा नहीं पाता तथा सिलिएक रोग से ग्रसित हो जाता है। इस रोग में छोटी आंत में सूजन आ जाने से लौह तत्व, फोलिक एसिड, कैल्शियम, नियासिन तथा वसा में घुलनशील विटामिन सहित कई महत्वपूर्ण पोषक तत्वों का अवशोषण नहीं हो पाता है।

स्वास्थ्य लाभ

छोटे दानों वाले अनाज प्राचीन काल से भारत में खाद्यान्न के रूप में प्रयुक्त फसलें रही हैं। ये फसलें भरपूर पोषण तथा विभिन्न स्वास्थ्य लाभों से परिपूर्ण हैं। ये फसलें कार्बोहाइड्रेट, सूक्ष्म पोषक तत्व तथा फाइटोकेमिकल तत्वों का बहुत अच्छा स्रोत हैं। प्रमुख अनाजों की तरह छोटे दानों वाले अनाज का मुख्य घटक कार्बोहाइड्रेट है। कार्बोहाइड्रेट में 65-70 प्रतिशत स्टार्च तथा 16-20 प्रतिशत गैर-स्टार्च कार्बोज होते हैं। इससे लगभग 95 प्रतिशत आहारीय रेशों की प्राप्ति होती है।

रागी का उत्पादन देश के विभिन्न राज्यों में होता है। रागी एक वर्षा आधारित फसल के रूप में कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, ओडिशा, आंध्र प्रदेश में जून-जुलाई में, उत्तराखंड एवं हिमाचल में अप्रैल-जून में एवं रबी मौसम की फसल के रूप में सितम्बर-अक्टूबर में कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश में उगाई जाती है। रागी के उत्पादन हेतु एक अच्छी तरह तैयार खेत में 22.5-30 सेंमी पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर बुआई की जाती है। कुछ प्रक्षेत्रों में 20 से 25 दिनों की पौध की रोपाई भी की जाती है। अच्छी पैदावार के लिए पौधों की एक उचित संख्या बनाए रखना आवश्यक होता है। उर्वरक के रूप में 5 टन प्रति हेक्टर कम्पोस्ट खाद एवं 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20 कि.ग्रा. फॉस्फेट एवं 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है। रागी को एक अंत:वर्ती फसल के रूप में भी उगाया जाता है। मूंग, उड़द, सोयाबीन एवं मूंगफली के साथ उगाई जाने वाली प्रमुख अंत:वर्ती फसलें हैं।

कोदो, कुटकी एवं सांवा का उत्पादन पुरातन समय से भारत के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में किया जाता है। प्रमुख उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात एवं महाराष्ट्र हैं। इनका उत्पादन मुख्यत: आदिवासी बाहुल्य इलाकों में होता है। मानसून आधारित क्षेत्रों में इनका उत्पादन प्रमुख रूप से होता है। साधारणतया बुआई जून के अंतिम सप्ताह अथवा जुलाई में की जाती है। इन फसलों में खाद का प्रयोग साधारणतया नहीं किया जाता। परन्तु 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन एवं 20 कि.ग्रा. फॉस्फेट प्रति हेक्टर का उपयोग कर इनके प्रति हेक्टर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। फसल की विभिन्न गतिविधियां मानव श्रम एवं पशु ऊर्जा आधारित हैं।

कंगनी एवं चीना का उत्पादन उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के ऐसे इलाकों में किया जा सकता है जहां सूखे की आशंका ज्यादा होती है। ये फसलें कम बारिश के इलाकों में उगाई जाती हैं। इनका उत्पादन आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं कुछ उत्तर-पूर्वी राज्यों में होता है।

बाजरे का उत्पादन अन्न एवं चारे दोनों उपयोग के लिए किया जाता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। पांरपरिक रूप से बाजरे का उत्पादन बारानी खेती के रूप में किया जाता रहा है। उत्पादकता बढ़ाने संकर बीजो उपयोग किया जाने लगा है। बाजरे का उत्पादन मुख्यत: कम उत्पादक एवं कम जल उपलब्धता वाली भूमि मैं किया जाता है। यह फसल विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छा उत्पादन देती है बाजरे का उत्पादन प्रमुखत: खरीफ के मौसम में होता है। इसकी बुआई हेतु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेंटीमीटर एवं पौध से पौध की दूरी 10-20 सेंटीमीटर है। अच्छे उत्पादन हेतु 8-10 टन प्रति हेक्टेयर कम्पोस्ट खाद एवं 60-80 किलोग्राम नाइट्रोजन एवं 40 किलोग्राम फॉस्फेट प्रति हेक्टेयर का उपयोग करना चाहिए। कुछ राज्यों में बाजरे के साथ अन्य अन्त: वर्ती फसलें भी उगाई जाती हैं।

भारत एक प्रमुख छोटे दानों वाले अनाज फसल उत्पादक देश है। छोटे दानों वाले अनाज में कोदो, कुटकी एवं सांवा भारत में ही सामान्यत: उगाए जाते हैं। ये फसलें साधारणतया घास प्रजाति के सी-ग्रुप के पौधे हैं, जो गर्म मौसम में उगते हैं। देश में इनका उत्पादन समुद्र तल से लेकर लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई तक होता है। भारत में 21-22 लाख हेक्टर क्षेत्र में छोटे दानों वाले अनाज फसलों का उत्पादन किया जाता है। ये फसलें विभिन्न तरह की जलवायु एवं भूमि में उगाई जाती हैं। इन फसलों का उत्पादन पारंपरिक तरीकों से किया जाता रहा है इसीलिए इनकी उत्पादकता 500 कि.ग्रा. /हेक्टर से लेकर 1000 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर है। इन फसलों में सबसे अधिक उत्पादकता रागी;1200 कि.ग्रा प्रति हेक्टर की है। छोटे दानों वाले अनाज फसलें आदि काल से विभिन्न तरह के जलवायु प्रक्षेत्रों में सबसे आसानी से उत्पादित होने वाली फसलें रही हैं। सूखे अथवा विपरीत परिस्थितियों में भी इन फसलों से दूसरी अन्य फसलों की तुलना में बेहतर उत्पादन प्राप्त होता है। ये फसलें पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं। इस कारण पिछले एक दशक में इन फसलों की मांग में बढ़ोतरी हुई है। इन फसलों में ज्वार एवं बाजरा को प्रमुख फसल एवं अन्य फसलों को लघु अनाज के रूप में परिभाषित किया जाता है। छोटे दानों वाले अनाज खाद सुरक्षा और कुपोषण को दूर करने मदद करते है।

प्रमुख अनाजों के प्रचलित नाम तथा पोषक तत्व

क्र.	छोटे दानों वाले अनाज अंग्रेजी नाम	अन्य नाम	पोषक तत्व प्रति 100 ग्राम				
			प्रोटीन (ग्राम)	फाइबर (ग्राम)	खनिज (ग्राम)	लौह (ग्राम)	कैल्शियम (ग्राम)
1.	सोरघम	ज्वार, ज्वारी	10	4	1.6	2.6	54
2.	पर्ल मिलेट	बाजरा, बाजरी	10.6	1.3	2.3	16.9	38
3.	रागी/फिंगर	मिलेट रागी, नगली, मंदिका, नाचनी, मंडुआ	7.3	3.6	2.7	3.9	344
4.	फॉक्सटेल मिलेट	ककुम, कंगनी, कंग	12.3	8	3.3	2.8	31
5.	बार्नयार्ड मिलेट	श्यामा, सांवा, स्वांक	11.2	10.1	4.4	15.2	11
6.	कोदो मिलेट	कोदों, कोदरा, कोदो, वरागु	8.3	9	2.6	0.5	27
7.	लिटिल मिलेट	कुटकी, गजरो,सुअन, सामा	7.7	7.6	1.5	9.3	17
8.	प्रोसो मिलेट	चीना, बरागु, वरि	12.5	2.2	1.9	0.8	14
9.	टेफ	विल्लियम्स लव ग्रास	13	8	0.85	7.6	180
10.	फोनिओ	सफेद फोनिओ, फोनिओ मिलेट, अछा राइस	11	11.3	5.31	84.8	18
11.	ब्राउन टॉप मिलेट	पेड्डा-सामा और कोर्ने	11.5	12.5	4.2	0.65	0.01

देश में छोटे दानों वाले अनाज फसलों की उपज के आंकड़े

छोटे दानों वाले अनाज	प्रदेश	क्षेत्रफल (लाख हे.)	उत्पादन (लाख टन)	उपज कि.ग्रा./हे.
ज्वार	महाराष्ट्र	16.00	14.04	878
	कर्नाटक	5.86	7.06	1204
	राजस्थान	5.09	5.27	1036
	भारत	**36.47**	**40.34**	**1106**
बाजरा	राजस्थान	42.65	42.81	1004
	उत्तर प्रदेश	10.10	21.95	2173
	हरियाणा	5.43	11.69	2154
	भारत	**70.08**	**95.31**	**1360**
रागी	कर्नाटक	6.82	8.65	1268
	तमिलनाडु	0.63	1.89	2989
	उत्तराखंड	0.69	1.01	1469
	भारत	**10.37**	**13.86**	**1336**
छोटे अनाज	मध्य प्रदेश	1.65	1.47	892
	उत्तराखंड	0.40	0.60	1503
	ओडिशा	0.48	0.27	566
	भारत	**4.96**	**4.29**	**864**
कुल छोटे दानों वाले अनाज	राजस्थान	47.75	48.09	1007
	उत्तर प्रदेश	13.47	26.98	2003
	कर्नाटक	14.25	17.49	1227
	भारत	**121.88**	**153.79**	**1262**

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मेथी की स्मार्ट खेती

भरपूर पत्तियां और बेहतर दाने की उपज

• डॉ. निशिथ गुप्ता • डॉ. जी.एस. चुंडावत
• डॉ. राजेश गुप्ता • संतोष पटेल
• डॉ. एस.पी. त्रिपाठी
रा.वि.सिं.कृ.वि.वि.-कृषि विज्ञान केन्द्र, मंदसौर

मेथी की दो महत्वपूर्ण स्पीसीज पाई जाती हैं।

देशी मेथी – इसकी वृद्धि धीमी होती है तथा फूलों का रंग गुलाबी सफेद होता है। फूल बड़े आकार के होते हैं। फली का आकार 6-7 सेमी तथा आकृति सीधी होती है। बीज कसूरी मेथी की अपेक्षा बड़े एवं सुगंधरहित होते हैं। देशी मेथी का उपयोग मुख्यतः मसाले के रुप में होता है।

कसूरी मेथी – यह सुगंधित मेथी है। इसकी बढ़वार धीमी तथा पत्तियां छोटे आकार की गुच्छे में लगी होती है। फूल चमकदार नारंगी-पीले रंग के होते हैं। फली का आकार 2-3 सेमी और आकृति हंसिये जैसे होती है। बीज देशी मेथी के अपेक्षा छोटे होते हैं। इसका उपयोग सुगंधित पत्तियों के रूप में होता है।

भूमि

दोमट या बलूई दोमट मुदा जिसमें कार्बनिक पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो, इसकी खेती दोमट मटियार भूमि में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। यह क्षारीयता को अन्य फसलों की तुलना में अधिक सहन कर सकती है।

बीज दर

मेथी में बीज दर इसकी स्पीशीज पर निर्भर करती है। सादी मेथी की बीज की मात्रा 20 किग्रा/हेक्टेयर तथा कसूरी मेथी के लिये बीज की मात्रा 10-12 किग्रा/हेक्टेयर लगती है।

बीजोपचार

बीज को बोने से पूर्व कार्बेन्डाजिम (2.5 ग्राम/किलो बीज) अथवा मैंकोजेब+कार्बेन्डाजिम के मिश्रण (2.5 ग्राम/किलो बीज) अथवा ट्राईकोडर्मा विरडी (5 ग्राम/किलो बीज) से उपचारित कर लें। साथ ही बीज को राईजोबियम कल्चर (5 ग्राम/किलो बीज) से भी उपचारित करना लाभदायक होता है।

मेथी महत्वपूर्ण पत्ती वाली सब्जी के साथ-साथ बीज वाले मसाले की फसल है। इसकी पत्तियों का उपयोग सब्जी के रुप में तथा बीजों का उपयोग मसाले के रुप में भोजन को स्वादिष्ट बनाने में किया जाता है। मेथी में प्रोटीन बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है साथ ही इसमें सूक्ष्म तत्व भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहते हैं। यह विटामीन 'सी' के अलावा विटामीन 'के' का भी अच्छा स्त्रोत है।

बुवाई की विधि एवं दूरी

मेथी में बुवाई की विधियां प्रचलित हैं।

छिटकवां विधि – इसमें सुविधानुसार क्यारियां बनाई जाती है फिर बीजों को एक समान रुप से छिड़क कर उस पर मिट्टी चढ़ा देते हैं।

कतार विधि – इस विधि में बीजों की बुवाई सीडड्रिल की सहायता से कतार से कतार 20-30 सेमी तथा पौधे से पौधे 10 सेमी की दूरी पर करते हैं। बीजों को गहराई 5 सेमी से अधिक नहीं हो। कसूरी मेथी के लिये यह गहराई 2 सेमी रखें।

बुवाई का समय

बुवाई का उपयुक्त समय मध्य अक्टूबर से मध्य नवंबर तक उपयुक्त होता है। देरी से बुवाई करने पर उपज कम प्राप्त होती है।

खाद एवं उर्वरक

मृदा जांच के आधार पर खाद व उर्वरक का प्रयोग करना लाभदायक होता है। यदि किसी कारणवश मृदा जांच ना हो पाए तो 40 किग्रा नत्रजन, 40-50 किग्रा फास्फोरस तथा 20-30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा अंतिम जुताई के समय खेत में मिला दें। नत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 30-60 दिन के मध्य टॉपड्रेसिंग के रुप में तथा पत्ती के लिये उगाई जाने वाली मेथी में हर कटाई के बाद सिंचाई के साथ दें। चूंकि यह दलहनी फसल है इसलिये इसका जड़ नत्रजन स्थिरीकरण का कार्य करता है अतः फसल को कम नत्रजन देने की आवश्यकता होती है।

सिंचाई

मेथी के बीजों के उचित अंकुरण के लिये मृदा में पर्याप्त नमी होना अत्यंत आवश्यक है। यदि प्रारंभ में मृदा में नमी की कमी हो तो बुवाई के तुरंत बाद एक सिंचाई करें। इसके बाद 10-15 दिन के अंतराल पर मौसम तथा मृदा के अनुसार सिंचाई करते रहें। पुष्पन एवं बीज बनते समय मृदा में नमी की कमी नहीं हो अन्यथा उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। खेत में अनावश्यक पानी के जमाव होने पर मेथी पीली पड़कर सूखने लगती है, इसलिये पानी के निकास की उचित व्यवस्था करें।

खरपतवार प्रबंधन

ऑक्सीडाइआर्जिल का बुवाई के बाद तथा अंकुरण से पहले 75 ग्राम/हेक्टे. की दर से छिड़काव करने भी खरपतवारों का नियंत्रण अच्छा होता है।

उपज

मेथी की उपज किस्मों एवं उपयोग में लाये जाने वाले भाग पर निर्भर करता है।

पत्ती उत्पादन

देशी मेथी – 70 से 80 क्विंटल/हेक्टेयर, कसूरी मेथी – 90 से 100 क्विंटल/हेक्टेयर।

बीज उत्पादन

देशी मेथी – 15 से 20 क्विंटल/हेक्टेयर, कसूरी मेथी – 6 से 8 क्विंटल/हेक्टेयर।

उन्नत प्रजातियां

किस्म	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उत्पादन (क्विंटल/हे.)	मुख्य विशेषताएं
अजमेर मेथी-1	135-140	20-22 (बीज) 70-75 (हरी पत्ती)	फलियों में बीजों की संख्या 17-20, दाने बड़े व कम कड़वे
अजमेर मेथी-2	135-140	15-18 (बीज) 70-75 (हरी पत्ती)	फलियों में बीजों की संख्या 16-18, दाने छोटे व अधिक कड़वे
अजमेर मेथी-3	137-140	13-15 (बीज)	भभूतिया रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी
अजमेर मेथी-4	122-130	18-20 (बीज)	भभूतिया व जड़ सड़न रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी
अजमेर मेथी-5	110-130	17-18 (बीज)	भभूतिया व अल्टरनेरिया झुलसा रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी
राजस्थान मेथी-305 RMt (305)	120-125	13-15 (बीज)	पौधे छोटे और जल्दी पकने वाली किस्म, भभूतिया रोग व जड़ गांठ सूत्रकृमि के लिये प्रतिरोधी
पंत रागिनी	170-175	12-13 (बीज)	पत्ती एव दाने दोनो के लिये उपयुक्त किस्म, मृदुरोमिल आसिता रोग के लिये प्रतिरोधी
हिसार मुक्ता	130-140	20-22 (बीज)	बीज के लिये अधिक उपयुक्त, भभूतिया एवं मृदुरोमिल आसिता रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी
हिसार माधवी	130-140	18-20 (बीज)	पत्ती एव दाने दोनों के लिये उपयुक्त, भभूतिया एवं मृदुरोमिल आसिता रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी
हिसार सुवर्णा	130-140	16-17 (बीज)	पत्ती एवं दाने दोनों के लिये उपयुक्त, भभूतिया रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी
पूसा कसूरी	–	80 (हरी पत्ती) 5-7 (बीज)	विशेष सुगंध वाली हरी पत्तियों की अधिक पैदावार देने वाली किस्म

प्रमुख रोग

चूर्णिल आसिता: इस रोग की प्रारंभिक अवस्था

में पत्तियों पर सफेद छोटे-छोटे धब्बे या सफेद चूर्ण दिखाई देते हैं। रोग के उग्र रुप धारण करने पर पूरी पत्तियां सफेद चूर्ण से ढ़क जाती है जिसके कारण पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती हैं। पौधों की भोजन बनाने की क्रिया अवरुद्ध हो जाती है, फलस्वरुप उत्पादन में अत्यधिक (15-20 प्रतिशत) कमी आ जाती है। कभी-कभी फलों पर भी रोग के लक्षण दिखाई देते हैं।

नियंत्रण

- बुवाई के पूर्व बीजों को कार्बेन्डाज़िम . मैंकोजेब (3 ग्रा./किग्रा. बीज) अथवा ट्रायकोडर्मा विर्डी (5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) से उपचारित करें।
- सल्फर पाउडर का 20 से 25 किग्रा/हेक्टेयर की दर से खड़ी फसल पर भुरकाव करें।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर घुलनशील सल्फर का 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से 15 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव करें।

जड़ सड़न: यह रोग के लक्षण फूल एवं फलियों के बनते समय दिखाई देते हैं। रोग की प्रारंभिक अवस्था में पत्तियां सूखना शुरु हो जाती है बाद में पूरा पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें एवं उचित फसल चक्र अपनायें।
- बुवाई के पूर्व बीजों को कार्बेन्डाज़िम . मैंकोजेब (3 ग्रा./किग्रा. बीज) अथवा ट्रायकोडर्मा विरडी (5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) से उपचारित करें।
- मृदा में 150 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से नीम की खली मिलाने से भी रोग नियंत्रण में सहायता मिलती है।
- कार्बेन्डाजिम (0.5 ग्राम/लीटर पानी) अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड (2 ग्राम/लीटर पानी) के घोल का सिंचन या ड्रेंचिंग रोग की प्रारंभिक अवस्था एवं 30 दिन बाद करें।

पत्ती धब्बा रोग: यह रोग सर्कोस्पोरा जाति के फफूंदों द्वारा फैलता है। पत्तियों पर छोटे, गोल, कत्थई रंग के धब्बे पुरानी पत्तियों पर बनते हैं।

नियंत्रण:

- मैंकोजेब (0.2 प्रतिशत) या कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

प्रमुख कीट:

माहू या एफिड: यह कीट पौधे के कोमल भागों

से रस चूसता है जिससे पत्तियां पीली हो जाती हैं और दाने सिकुड़ जाते हैं जिससे उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

नियंत्रण:

- डायमेथोएट (0.03 प्रतिशत) तथा इमिडाक्लोप्रिड (0.003 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

बाढ़ से पशुओं को कैसे बचाएँ पशुपालक

- डॉ. अलका सुमन ● डॉ. अंचल केशरी
- डॉ. आदेश कुमार ● डॉ. शशि टेकाम
- डॉ. रश्मि कुलेश

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर

dralkasuman@gmail.com

भारत में बाढ़ एक सामान्य प्राकृतिक आपदा है, जो हर वर्ष अनेक राज्यों में भारी तबाही मचाती है। इस आपदा से मानव जीवन के साथ-साथ पशुधन पर भी गंभीर प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ पशुपालन आजीविका का मुख्य स्रोत होता है, वहाँ बाढ़ से पशुओं की जान पर खतरा उत्पन्न हो जाता है। इसलिए पशुपालकों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे बाढ़ की स्थिति में अपने पशुओं की सुरक्षा के लिए समय रहते उचित तैयारियाँ करें। इस लेख में हम यह समझेंगे कि पशुपालक बाढ़ से अपने पशुओं को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं।

बाढ़ पूर्व तैयारी

बाढ़ की स्थिति आने से पहले ही पशुपालकों को कुछ जरूरी सावधानियाँ और तैयारियाँ कर लेनी चाहिए ताकि समय पर जान-माल की हानि न हो। बाढ़ पूर्व तैयारी में निम्नलिखित उपाय शामिल हैं:

उच्च स्थान का चयन: पशुओं को सुरक्षित रखने के लिए पहले से ही किसी ऊँचे और सुरक्षित स्थान की पहचान कर लें, जहाँ बाढ़ का पानी न पहुँच सके।

अस्थायी आश्रय की व्यवस्था : तिरपाल, बांस या अन्य सामग्री से एक अस्थायी शरणस्थल तैयार रखें जहाँ आपातकालीन स्थिति में पशुओं को ले जाया जा सके।

चारा और पानी का भंडारण : कम से कम 7-10 दिनों के लिए सूखा चारा और स्वच्छ पीने के पानी का भंडारण कर लें, ताकि बाढ़ के दौरान पशुओं को भोजन और पानी की कमी न हो।

पशु चिकित्सा किट तैयार रखें : आवश्यक दवाइयाँ, फर्स्ट एड किट, और पशुओं के टीकाकरण की व्यवस्था पहले से कर लें।

पहचान चिन्ह : पशुओं पर पहचान के लिए टैग या पेंट से कोई निशान लगा दें, जिससे बिछुड़ने की स्थिति में उन्हें आसानी से पहचाना जा सके।

स्थानीय प्रशासन से संपर्क : बाढ़ की संभावना होने पर स्थानीय प्रशासन या पशुपालन विभाग से संपर्क बनाए रखें और उनके दिशा-निर्देशों का पालन करें।

बाढ़ के दौरान की सावधानियाँ

जब बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तब घबराने की बजाय सतर्कता और सही निर्णय लेना बहुत जरूरी होता है। बाढ़ के दौरान पशुओं की सुरक्षा के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ अपनायें :

पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखें : यदि संभव हो, तो पहले से चिन्हित ऊँचे और सुरक्षित स्थान पर पशुओं को तुरंत ले जाएँ।

भीड़भाड़ से बचें: पशुओं को एक साथ बहुत अधिक संख्या में एक जगह पर न रखें, इससे भगदड़ या चोट की आशंका हो सकती है।

भोजन और पानी की निगरानी : पशुओं को समय-समय पर सूखा चारा और स्वच्छ पानी उपलब्ध कराएँ। बाढ़ का पानी अक्सर दूषित होता है, जिससे बीमारी फैल सकती है।

बिजली के उपकरणों से दूरी रखें: जलभराव वाले क्षेत्रों में बिजली के उपकरण या तारों से दूर रहें, जिससे करंट लगने का खतरा न हो।

पशुओं की निगरानी करें: पशु भयभीत हो सकते हैं, इसलिए उन पर लगातार नजर रखें और शांत वातावरण बनाए रखें।

बीमार पशु को अलग रखें: यदि कोई पशु बीमार हो जाए तो उसे अन्य पशुओं से अलग रखें और नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

स्थानीय चेतावनियों पर ध्यान दें : प्रशासन द्वारा जारी की गई चेतावनियों और दिशा-निर्देशों का पालन करें।

बाढ़ के बाद की देखभाल

बाढ़ समाप्त होने के बाद भी पशुओं की देखभाल में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए, क्योंकि इस समय कई प्रकार की बीमारियों और संक्रमणों का खतरा बना रहता है। पशुओं की स्थिति की जांच और उनके वातावरण की सफाई बेहद आवश्यक होती है। बाढ़ के बाद निम्नलिखित देखभाल करें :

स्वास्थ्य जांच कराएँ: पशुओं की तुरंत स्वास्थ्य जांच कराएँ और यदि कोई बीमारी या कमजोरी दिखाई दे, तो पशु चिकित्सक से उपचार करवाएँ।

साफ-सफाई करें : पशुओं के रहने के स्थान को अच्छे से साफ करें, कीचड़, गंदगी और दूषित पानी को हटाकर उसे सूखा और स्वच्छ बनाएं।

चारा और पानी की गुणवत्ता जांचें : सड़ा-गला या गीला चारा न दें। पीने का पानी स्वच्छ और उबला हुआ हो, ताकि संक्रमण से बचा जा सके।

बीमारियों से बचाव : टीकाकरण कराएँ और कीड़ों या मच्छरों से बचाव के लिए छिड़काव करें।

मानसिक स्थिति का ध्यान रखें : बाढ़ से पशु भी तनाव में आ सकते हैं, इसलिए उन्हें शांत और सुरक्षित माहौल दें।

पुनर्वास योजना बनाएँ : यदि पशुओं को अन्यत्र ले जाया गया था, तो उन्हें धीरे-धीरे उनके मूल स्थान पर वापस लाएं और उनकी दिनचर्या सामान्य करने की कोशिश करें।

पशुओं के दांतों से कैसे लगाएं आयु का अनुमान

- डॉ. एस. के. गुप्ता ● डॉ. योगिता पांडेय
- डॉ. शिवानी खरे

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर

पशुओं की सही देखभाल और प्रबंधन के लिए उनकी आयु का पता होना आवश्यक है। विशेष रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पशुपालन में यह ज्ञान अत्यंत उपयोगी साबित होता है। चूँकि पशु अपनी आयु स्वयं नहीं बता सकते, इसलिए किसान और पशुपालक आयु जानने के लिए मुख्यत: दंतविन्यास (दाँतों की स्थिति व विकास) का सहारा लेते हैं। यह तरीका प्राचीन समय से प्रचलित है और आज भी वैज्ञानिक रूप से सही माना जाता है। पशुपालकों के लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि उनके पशु की आयु कितनी है। इससे उन्हें दूध उत्पादन, प्रजनन (ब्रीडिंग), दवा देने और खरीद-फरोख्त में सही निर्णय लेने में मदद मिलती है।

दंत विन्यास क्या है?

दंतविन्यास का मतलब है - पशु के मुँह में दाँतों की संख्या, उनका आकार, स्थिति और घिसाव की अवस्था।

दुग्धदंत : छोटे और सफेद दाँत जो जन्म के समय से होते हैं।

स्थायी दाँत : मज़बूत और बड़े दाँत जो दुग्धदंत की जगह धीरे-धीरे निकलते हैं।

समय के साथ दाँत घिसते और छोटे होते जाते हैं, जिससे आयु का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

दंत विन्यास का महत्व

पशुओं के जीवन चक्र, उनकी उत्पादन क्षमता और प्रबंधन से जुड़ी जानकारी प्राप्त करने के लिए दंतविन्यास का अत्यधिक महत्व है। चूँकि अधिकांश पशुओं की जन्म तिथि का लिखित रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं होता, ऐसे में दाँतों की स्थिति, संख्या और घिसाव देखकर उनकी आयु का अनुमान लगाना सबसे विश्वसनीय और सरल तरीका माना जाता है। आयु निर्धारण के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि पशु दूध उत्पादन के सर्वोत्तम काल में है या प्रजनन के लिए उपयुक्त अवस्था में है। युवा पशु प्रजनन और कामकाज के लिए अधिक उपयोगी होते हैं, जबकि अत्यधिक बूढ़े पशु उत्पादन क्षमता में कमजोर हो जाते हैं। पशुओं की खरीद-फरोख्त में भी दंतविन्यास का विशेष महत्व है। बाजार में कई बार विक्रेता पशु की वास्तविक आयु छिपा लेते हैं, लेकिन दाँतों की स्थिति देखकर खरीदार आसानी से जान सकता है कि पशु युवा है या बूढ़ा। यही नहीं, दाँतों के अत्यधिक घिसने या टूटने से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पशु को कठोर आहार पचाने में कठिनाई हो रही है, इसलिए उसके लिए मुलायम और संतुलित चारे की आवश्यकता है। इस प्रकार दंतविन्यास न केवल आयु का अनुमान लगाने का साधन है, बल्कि पशु के स्वास्थ्य और पोषण स्थिति का भी दर्पण है।

जन्म से लेकर 2 वर्ष तक

जन्म से 1 माह तक - बछड़े या बकरी के बच्चे के सभी दाँत दूध के दाँत (दुग्धदंत) होते हैं।

1 से 1.5 वर्ष - आगे के दो स्थायी दाँत निकल आते हैं।

2 वर्ष की आयु : आगे के चार स्थायी दाँत स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते हैं।

2 से 5 वर्ष तक

2.5 से 3 वर्ष - मध्य के दाँत स्थायी रूप से आ जाते हैं।

3.5 से 4 वर्ष - दूसरे जोड़े के दाँत स्थायी हो जाते हैं।

4.5 से 5 वर्ष - लगभग सभी स्थायी दाँत निकल आते हैं। इस अवस्था में पशु को पूरी तरह युवा माना जाता है।

6 वर्ष से आगे

6 से 8 वर्ष - दाँतों के किनारे घिसने लगते हैं और सतह पर हल्की रेखाएँ दिखती हैं।

8 से 10 वर्ष : दाँत छोटे, गोल और घिसे हुए दिखाई देने लगते हैं।

10 वर्ष से अधिक - कई दाँत गिरने लगते हैं, जिससे पशु की उम्र का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

सीमाएँ

यद्यपि दंतविन्यास से आयु का अनुमान काफी हद तक सही होता है, लेकिन यह पूरी तरह सटीकनहीं होता। पोषण, दाने-पानी की गुणवत्ता, चबाने की आदत और पालन-पोषण की स्थिति भी दाँतों के घिसाव को प्रभावित करती है।

निष्कर्ष : पशुओं की आयु का अनुमान लगाने के लिए दंतविन्यास सबसे व्यवहारिक और पारंपरिक तरीका है। किसान और पशुपालक यदि दाँतों की स्थिति पर ध्यान दें तो वे अपने पशुओं के प्रबंधन, दवा देने, प्रजनन और बिक्री-खरीद के समय सही निर्णय ले सकते हैं।

श्री चतुर्वेदी ने कृषि भवन में स्वच्छता अभियान चलाया

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक 'स्वच्छोत्सव' मनाया जा रहा है। यह अभियान 2 अक्टूबर, 2025 को स्वच्छ भारत दिवस समारोह के साथ समाप्त होगा। कृषि मंत्रालय में भी स्वच्छता अभियान की शुरुआत श्री देवेश चतुर्वेदी, सचिव कृषि ने की। कृषि भवन के कक्षों, अनुभागों और बेसमेंट का निरीक्षण किया गया, जहां सचिव ने सभी कर्मचारियों से अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने का आग्रह किया।

इंदौर मंडी की व्यवस्था सुधारी जाएगी : श्री पुरुषोत्तम

इंदौर (कृषक जगत)। संयुक्त किसान मोर्चा का प्रतिनिधि मंडल गत दिनों इंदौर आए मंडी बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री कुमार पुरुषोत्तम से मिला तथा उन्हें मंडी की व्यवस्थाओं तथा किसानों को माल बेचने में आ रही परेशानी की ओर ध्यान आकर्षित कराया और ज्ञापन सौंपा ।

उल्लेखनीय है कि मंडी बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री कुमार पुरुषोत्तम ने इंदौर संभाग के मंडी अधिकारियों की बैठक ली तथा उनसे विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। संयुक्त किसान मोर्चा का प्रतिनिधिमंडल सर्वश्री रामस्वरूप मंत्री, बबलू जाधव, चंदन सिंह बड़वाया शैलेंद्र पटेल अरशद पटेल पप्पू यादव आदि के नेतृत्व में श्री कुमार पुरुषोत्तम से संयुक्त संचालक मंडी बोर्ड के कार्यालय में मिला तथा उन्हें ज्ञापन देकर इंदौर की मंडी की अव्यवस्थाओं को दूर करने की मांग की ।

ज्ञापन में उठाए गए मुद्दों पर प्रबंध संचालक श्री कुमार पुरुषोत्तम ने सहमति जताई तथा उस पर कार्रवाई किए जाने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि जल्द ही 10 टन वाले कांटे के बारे में निर्णय लिया जाएगा तथा अन्य मांगों को भी हल करने की हर संभव कोशिश की जाएगी। इस अवसर पर संयुक्त संचालक मंडी बोर्ड, इंदौर सुश्री प्रवीणा चौधरी, मंडी सचिव श्री नरेश परमार सहित मंडी समिति के कई अधिकारी भी उपस्थित थे।

श्री चौधरी कृभको के अध्यक्ष

कृभको के नए अध्यक्ष और उपाध्यक्ष निर्वाचित

नई दिल्ली (कृषक जगत)। उर्वरक उत्पादन एवं कृषि इनपुट्स में संलग्न भारत की अग्रणी सहकारी संस्थाओं में से एक कृभको ने अपने नए अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के चुने। श्री वी. सुधाकर चौधरी को सर्वसम्मति से कृभको का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इससे पूर्व वे उपाध्यक्ष रह चुके हैं। वे आंध्र प्रदेश के एक प्रतिष्ठित सहकारी नेता एवं व्यवसायी हैं। इसके साथ ही, डॉ. चंद्रपाल सिंह यादव जो पूर्व में कृभको के अध्यक्ष रह चुके हैं, उन्हें भी सर्वसम्मति से कृभको का उपाध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के निर्वाचन 15 सितम्बर 2025 को एनसीयूआई, नई दिल्ली में संपन्न हुए। वर्तमान निदेशक मंडल में डॉ. बिजेन्दर सिंह, श्री भंवर सिंह शेखावत, श्री मगनलाल धनजीभाई वडाविया, श्री राजन्ना राजेन्द्रा, श्री भीखाभाई जावेरभाई पटेल, श्री बिपिनभाईएन.पटेल, श्री अजय राय, श्रीमती कविता मंजरी परिदाएवं श्रीमती शिल्पी अरोड़ा शामिल हैं।

भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान में साहित्य में परिवार परंपरा पर हुआ विशेष सत्र

डॉ. साधना गंगराड़े ने की अध्यक्षता

भोपाल। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के प्रतिष्ठा प्रसंग 'भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान' के भोपाल में गत 14 सितंबर को हुए कार्यक्रम में,'भारतीय साहित्य और परिवार परंपरा' पर एक विशेष सत्र की अध्यक्षता कृषक जगत की संयुक्त संपादक और हिंदी लेखिका संघ की अध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े ने की। आपने बाबा तुलसी दास से लेकर, हिन्दी साहित्य के पुरोधा भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं इसी कड़ी में प्रेमचंद एवं अन्य वरेण्य दिग्गज साहित्यकारों के अवदान को रेखांकित करते हुए अपनी बात रखी। इस कार्यक्रम में अन्य साहित्यकारों ने भी विचार व्यक्त किए। मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे के संयोजन एवं नेतृत्व में हुए साहित्यिक विमर्श में दिल्ली, जबलपुर, दमोह, देवास, इंदौर, हरदा सहित अन्य साहित्यकारों ने शिरकत की।

श्री संजय जैन सम्मानित हुए

भोपाल (कृषक जगत)। लिटिल बेले रंग श्रीसभागार में आयोजित डॉ. राजेन्द्र कुमार स्मृति सम्मान से जनसंपर्क के अपर संचालक श्री संजय जैन को प्रदेश के प्रसिद्ध रंगकर्मी राजीव वर्मा के हाथों सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समारोह समिति के पदाधिकारी एवं सर्वश्री विनोद तिवारी, अमिताभ अनुरागी के साथ राजेन्द्र कुमार परिजन व श्रीमती रीता वर्मा, पत्रकार सुनील गंगराड़े, जनसंपर्क अधिकारी मुकेश मोदी, संदीप कपूर, सेवानिवृत्त अपर संचालक सुरेश गुप्ता एवं रघुवीर तिवारी वरिष्ठ पत्रकार सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम में संजय श्रीवास्तव द्वारा निर्देशित चिट्ठी नाटक का मंचन विशेष रहा, जो रंग दरबार समूह द्वारा प्रस्तुत किया गया।

मध्य प्रदेश में आईएएस अधिकारी बदले

भोपाल। राज्य शासन ने 18 आईएएस अधिकारियों की पदस्थापना में फेरबदल किया है। सूची इस प्रकार है-

श्री विशेष गढ़पाले प्रतिक्षारत को सचिव ऊर्जा, श्रीमती वंदना वैद्य संचालक आदिम जाति क्षेत्रीय विकास योजनाएं को प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश वित्त निगम इंदौर, श्री गजेन्द्र सिंह नागेश मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत सिंगरौली को मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत नरसिंहपुर, श्री गुरु प्रसाद प्रबंध संचालक स्टेट वाईड एरिया नेटवर्क (स्वान) को उप सचिव मुख्य सचिव कार्यालय, श्री दिव्यांक सिंह मु.कार्य.अधि. स्मार्ट सिटी इंदौर को अपर आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास भोपाल, सुश्री तपस्या परिहार मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत छतरपुर को आयुक्त नगर पालिक निगम कटनी, श्री शिशिर गेमावत मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत कटनी को अपर आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास भोपाल, डॉ. नेहा जैन मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत सीहोर को उप संचालक नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण इंदौर, श्री श्रेयान्स कूमट मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत मंडला को मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत उज्जैन, श्री तन्मय वशिष्ट शर्मा मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत अनूपपुर को अपर आयुक्त नगर पालिक निगम भोपाल, श्री दिलीप कुमार मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत नरसिंहपुर को आयुक्त नगर पालिक निगम देवास, श्री पवार नवजीवन विजय मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत सिवनी को अपर कलेक्टर इंदौर, श्री अनिल कुमार राठौर मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत डिंडौरी को कार्यकारी संचालक औद्योगिक विकास निगम जबलपुर, श्री अंशुमन राज मु.कार्य.अधि. जिला पंचायत सीधी को प्रबंध संचालक स्टेट वाईड एरिया नेटवर्क (स्वान) भोपाल, श्री अर्थ जैन अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) जोबट (अलीराजपुर) को मु.कार्य.अधि. स्मार्ट सिटी इंदौर, श्री अरविन्द कुमार शाह अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) शहडोल को अपर आयुक्त नगर पालिक निगम जबलपुर, श्री टी. प्रतीक राव अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) इटारसी को नगरपालिक निगम ग्वालियर, सुश्री अनिशा श्रीवास्तव अनु.वि.अधि. (राजस्व) पिपरिया को कार्यकारी संचालक औद्योगिक विकास निगम ग्वालियर।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

उज्जैन में पांच दिवसीय कृषि सखी प्रशिक्षण संपन्न

उज्जैन (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केंद्र एवं कृषि विभाग उज्जैन के संयुक्त तत्वावधान में 50 कृषि सखियों हेतु राष्ट्रीय मिशन प्राकृतिक खेती पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र,उज्जैन में डॉ ए. के. दीक्षित,प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि जयति सिंह, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, उज्जैन थीं। इस मौके पर श्री यूएस तोमर, उप संचालक कृषि,उज्जैन, श्री के. एस. केन,परियोजना संचालक आत्मा,डॉ. एस. के. सिंह, डॉ. रेखा तिवारी,डॉ. आशीष बोबडे,डॉ. मोनी सिंह,श्री भगवान अर्गल सहित वैज्ञानिक, अधिकारी एवं किसान मौजूद थे।

मुख्य अतिथि श्री सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्राकृतिक खेती किसानों के लिए आत्मनिर्भरता का मार्ग है। इससे उत्पादन लागत घटती है, मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ती है और उपभोक्ताओं को सुरक्षित, पोषक और स्वास्थ्यवर्धक आहार प्राप्त होता है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. सविता कुमारी ने बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत एवं वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने एवं उपयोग की तकनीक पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही फसलों को कीटों एवं रोगों से सुरक्षित रखने वाले नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र तथा दशपर्णी काढ़ा जैसे प्राकृतिक कीटनाशकों की विधि एवं उनके प्रयोग के बारे में बताया। डॉ. हंसराज जाटव वैज्ञानिक (विस्तार) ने प्रकृति खेती से उत्पादित फसलों के विपणन एवं मूल्य संवर्धन की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

इस प्रशिक्षण में जिले के प्रगतिशील किसानों ने भी अपने अनुभव साझा किए, जिनमे श्री योगेंद्र कौशिक ग्राम अजड़ावदा, श्री हकम सिंह ग्राम बुचाखेड़ी एवं श्री गिरधारीलाल ग्राम गिनोदा प्रमुख रहे। किसानों ने बताया कि प्राकृतिक खेती अपनाने से उनकी मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ी है, उत्पादन लागत घटी है, उपज का स्वाद और बाजार मूल्य दोनों बेहतर हुए हैं।

अंत में सभी प्रतिभागी कृषक सखियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सविता कुमारी ने किया।

कामयाब किसान की कहानी

मैकेनिकल इंजीनियर ने मौसंबी की खेती में पाया मुकाम

(दिलीप दसौंधी,मंडलेश्वर, कृषक जगत)। मैकेनिकल इंजीनियर की डिग्री के बावजूद ग्राम रूपखेड़ा तहसील कसरावद जिला खरगोन के श्री संदीप पटेल ने नौकरी के बजाय उद्यानिकी खेती को वरीयता दी और मौसम्बी की खेती कर चार साल में वह मुकाम हासिल कर लिया है, जो शायद नौकरी में नहीं मिलता। आत्मनिर्भर बने श्री पटेल के खेती को लेकर और भी कई सपने हैं, जो समय के साथ अवश्य पूरे होंगे।

33 वर्षीय युवा कृषक श्री पटेल ने कृषक जगत को बताया कि उनके पास मालिकाना हक की सिर्फ 1.3 हेक्टेयर ज़मीन है, जिसमें से दशमलव 4 हेक्टेयर पर वे उद्यानिकी फसल के तहत मौसम्बी की खेती करते हैं। सिंचाई के लिए दो बोरवेल और कुंआ है। पहले वे परम्परागत खेती के तहत कपास और गेहूं उगाते थे, लेकिन मुनाफा कम ही मिलता था। उद्यानिकी फसल लेने की प्रेरणा फूफा जी श्री महेश पटेल, बलगांव से मिली जो क्षेत्र के प्रसिद्ध केला उत्पादक हैं। श्री पटेल ने बताया कि 2021 में मौसम्बी के न्यू सेलर किस्म के 300 पौधे औरंगाबाद से लाकर लगाए थे, जिनमें फलोत्पादन 2024 में शुरू हुआ। पहली बहार 120 क्विंटल निकली, जिसे एक व्यापारी को सवा लाख में बेच दिया। 2025 की बहार को भी व्यापारी को पौने तीन लाख में बेच दिया। श्री पटेल की केला और पपीता का उत्पादन लेने वाले किसानों को सलाह है कि फसल लगाने से पहले सिंचाई के पानी की पीएच वेल्यू की जांच अवश्य करवाएं।

श्री पटेल को उद्यानिकी विभाग से यथा समय सहयोग और मार्गदर्शन मिलता रहता है। ग्राम पंचायत रूपखेड़ा द्वारा संदीप का चयन मनरेगा योजनांतर्गत निजी फलोद्यान के लिए किया गया था, जिसकी तकनीकी और प्रशासकीय स्वीकृति वित्त वर्ष 2020-21 में जारी हुई थी। इस कार्य के लिए 1.63 लाख रुपए की लागत से 342 मानव दिवस का रोजगार भी क्षेत्रवासियों को मिला था। श्री पटेल ने एक हेक्टेयर में एक नया बगीचा भी लगाया है , जिसमें जून 25 में पौधे रोपे थे, जो अब बड़े हो गए हैं। बीते वर्षों में इन्होंने गेहूं, चना, कपास प्याज़ और लहसुन को अंतरवर्तीय फसल के रूप में लिया था। श्री संदीप अपने बड़े भाई के साथ मिलकर दो हेक्टेयर में मौसम्बी फसल का और विस्तार करना चाहते हैं। खेती को लेकर इनके कई सपने हैं, जिन्हें साकार करने में वे जुटे हैं। इनकी मेहनत निश्चित ही रंग लाएगी।

हरसूद में नगद उर्वरक विक्रय केंद्र का हुआ शुभारंभ

हरसूद (कृषक जगत)। हरसूद क्षेत्र के किसानों की मांग पर मंत्री डॉ. विजय शाह के प्रयासों से नर्मदा वेयर हाउस छनेरा में नगद उर्वरक विक्रय केंद्र का शुभारंभ हुआ।

जिला विपणन अधिकारी श्रीमती श्वेता सिंह ने बताया कि इस केंद्र का संचालन मार्केटिंग सोसायटी न्यू हरसूद द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि छनेरा में नगद खाद विक्रय केंद्र प्रारम्भ होने से क्षेत्र के किसानों को काफी सुविधा होगी।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि श्री कमल खंडेलवाल, श्री राजेंद्र करोडे, श्री राम पंवार, किसान प्रतिनिधि श्री हेमन्त मीणा, मनोज यदुवंशी, मार्केटिंग सोसाइटी के पूर्व अध्यक्ष श्री विनोद पटेल और एस.डी.ओ कृषि श्रीमती अमृता मोरे सहित विभिन्न अधिकारी और किसान प्रतिनिधि मौजूद थे।

किसानों की मांग पूरी होने पर किसान संगठनों के प्रतिनिधियों ने जिला विपणन अधिकारी श्रीमती श्वेता सिंह का शॉल व श्रीफल से सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन सहकारिता निरीक्षक श्री राधा मोहन बिश्नोई ने किया।

केले के रेशे से बने उत्पादों ने बटोरी सराहना

बुरहानपुर (कृषक जगत)। दिल्ली में आयोजित 'आजीविका सरस मेला' में म.प्र.डे- राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन जिला बुरहानपुर अंतर्गत संचालित जय श्री कृष्णा आजीविका स्व सहायता समूह ने भागीदारी की। सरस मेला में पर्यावरण अनुकूल, हस्तनिर्मित और सतत विकास की भावना को दर्शाते हुए केले के रेशे से बने विभिन्न प्रकार के आकर्षक उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। मेले में प्रदर्शित उत्पादों में बैग, चटाई, डेकोरेटिव आइटम, पूजा झाड़ू, टोपी, किरिंग, पेन होल्डर, आसन आदि शामिल रहे। इन उत्पादों को बड़ी संख्या में लोगों द्वारा पसंद किया गया और खरीदा भी गया।

आजीविका मिशन का उद्देश्य न केवल स्थानीय कारीगरों को रोज़गार देना है, बल्कि एक जिला-एक उत्पाद अंतर्गत केले से बने उत्पादों को बढ़ावा देना भी है। सरस मेले में भागीदारी से समूह को न केवल बेहतर बाज़ार मिला, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपने उत्पादों की ब्रांडिंग और नेटवर्किंग का भी अवसर प्राप्त हुआ।

जिला परियोजना प्रबंधक आजीविका मिशन श्रीमती संतमति खलखो ने बताया कि, हस्तशिल्प, हथकरघा, और ग्रामीण उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए सरस मेला एक प्रमुख मंच है। सरस मेला में देशभर से आए शिल्पकारों-कारीगरों ने भाग लिया। केले के रेशे से बने उत्पादों ने खास तौर पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया और सराहना बटोरी।

ब्लूबेरी एवं जी-9 केले की खेती का किया निरीक्षण

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री शीलेन्द्र सिंह ने गत दिनों विकासखंड मोहखेड़ के ग्राम भुताई पहुंचकर प्रगतिशील किसान श्री कैलाश पवार द्वारा की जा रही ब्लूबेरी एवं जी-9 किस्म के केले की खेती का निरीक्षण किया। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री अग्रिम कुमार, उप संचालक कृषि श्री जितेन्द्र कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक एवं अन्य कृषक भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर कलेक्टर श्री सिंह ने किसान की मेहनत और नवाचार की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के प्रयास छिंदवाड़ा जिले के अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत साबित होंगे। ब्लूबेरी की खेती जिले में एक नया प्रयोग है, जो बागवानी क्षेत्र में बेहतर संभावनाओं के द्वार खोल रहा है। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि आधुनिक तकनीक और उन्नत किस्मों को अपनाकर किसान अपनी आय को कई गुना बढ़ा सकते हैं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस मॉडल को अन्य किसानों तक पहुंचाने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और तकनीकी सहयोग प्रदान किया जाए।

समस्या -समाधान

समस्या– गन्ना लगाने का समय आ रहा है अच्छे अंकुरण के लिये क्या करना उपयुक्त होगा।

– घनश्याम साहू

__समाधान–__ आपके क्षेत्र में अच्छा गन्ना

पैदा किया जाता है। आप अच्छे अंकुरण के लिये प्रमुख तकनीकी के बारे में जानना चाहते हैं अर्थात् आप जानते हैं कि अच्छा अंकुरण अच्छी फसल यह बात अनुकरणीय है। आप निम्न करें।

- *शुद्ध पानी से भरे टांके में 12–24 घंटे तक डुबो कर रखें यदि फसल बुआई में देरी हो रही है तो यह कार्य अवश्य किया जाये।*
- *इसके बाद उसमें 80 पी.सी.एम. नेप्थलिन एसिटिक एसिड (एन.एस.ए.) मिलाने से अच्छा अंकुरण प्राप्त किया जा सकता है।*
- *जड़ी फसल के डंठलों पर अंकुरण बढ़ाने के उद्देश्य से वीटावैक्स अथवा बाविस्टीन या ट्राईकोडर्मा के 2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। (दो ग्राम दवा/लीटर पानी)*
- *इसके अलावा इथरेल 500–1500 पी.पी.एम. या जिब्रेलिक एसिड 100 पी.पी.एम. घोल का छिड़काव करने से अच्छा अंकुरण प्राप्त किया जा सकता है।*

समस्या – मैं मधुमक्खी पालन करना चाहता हूं अच्छा उत्पादन लेने का समय तथा तरीका लिखें।

– श्यामराव

__समाधान__ – आपका प्रश्न बहुत सामयिक

है साथ में यह भी है कि हमारे प्रति उत्तर के लाभ से अन्य पाठकों को भी मार्गदर्शन प्राप्त हो जायेगा। इसलिये यह उपयोगी भी है आप निम्न उपाय करें।

- *मधुमक्खी पालन का उपयुक्त समय आ गया है।*
- *आपको किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से मधुमक्खी पालन के लिये प्रशिक्षण लेना होगा।*
- *प्रशिक्षण बिल्कुल मुफ्त में दिया जाता है। शासन द्वारा इसकी व्यवस्था है।*
- *प्रशिक्षण के दौरान आपको मधुमक्खी परिवार जीवन चक्र, मधुमक्खियों को व्यवहार उनकी कार्यशैली विभिन्न मौसम में प्रबंध के बिन्दुओं पर प्रशिक्षित किया जायेगा।*

प्रशिक्षण के लिये सम्पर्क

- *प्रमुख वैज्ञानिक, फल एवं सब्जी अनुसंधान उपकेन्द्र बैरसिया रोड, ईंटखेड़ी, भोपाल*
- *चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार हरियाणा,*

समस्या– मेरे खेत में हर वर्ष दीमक का प्रकोप होता है बुआई पूर्व बीजों का उपचार पर प्रकाश डालें।

– शोभाराम यादव

__समाधान–__ दीमक खेती तथा समाज दोनों

की दुश्मन है सामूहिक प्रयासों से इसके मुकाबला किया जा सकता है। परंतु प्रयास चहुंदिशा से होना चाहिए बुआई पूर्व आप निम्न उपचार करें।

- *बीज उपचार के लिए 0.35 मिली इमिडाक्लोप्रिड 48 प्रतिशत एफएस (प्रति 100 कि.ग्रा. बीज की मात्रा) का उपयोग करें।*
- *गेहूं–चना के बीज को पक्के फर्श पर पतली परत में बिखेर दें। तैयार घोल की आधी मात्रा बीज पर डालकर मिलायें। शेष आधे को बीज पर छिड़कें तथा अच्छी तरह मिला दें। बीज रात भर फैलाकर रखा रहने दें सुबह बुआई के लिये बीज को ले जाये।*
- *इस उपचार के बाद फफूंदनाशी दवा तथा कल्चर का उपयोग किया जाता है।*

समस्या– मैं हर वर्ष चना लगाना चाहता हूं, अच्छे उत्पादन के लिये प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डालें।

– प्रभाकर चौरे

__समाधान–__ चने की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए जिन मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है वे निम्नानुसार हैं।

- *भूमि की तैयारी जिस तरह से गेहूं के लिये की जाती है उसी स्तर पर की जाये सबसे खराब दशा वाला खेत चने के लिये नहीं चुना जाये।*

- *बीजोपचार दीमक तथा उगरा के बचाव हेतु अवश्य किया जाये।*
- *100 किलो डीएपी प्रति हेक्टर की दर से बीज के नीचे स्थापित किया जाये।*
- *असिंचित चने की बुआई अक्टूबर में ही कर दी जाये सिंचित चना नवम्बर तक बोया जा सकता है।*
- *एक सिंचाई बुआई 40–45 दिनों बाद तथा दूसरी 60–65 दिनों बाद परंतु यदि मावठा गिर चुका हो तो दूसरी सिंचाई ना की जाये खासकर गहरी काली भूमि वाले क्षेत्र में चने की खुटाई अत्यंत अवश्य कार्य होगा।*
- *इल्लियों की रोकथाम हेतु टी आकार की 40 खूटी/हे. की दर से लगायें।*
- *इल्लियों की रोकथाम हेतु कीटनाशकों का उपयोग आखिर समय किया जाये पहले जैविक कीटनाशकों का उपयोग करें।*

समस्या– मैं मसूर उत्पादन करना चाहता हूं। तकनीकी, अच्छा बीज कहां मिलेगा। कौन सा बीज अच्छा है कृपया लिखें।

– जसवंत सिंह

__समाधान–__ आप मसूर लगाना चाहते हैं। अभी इसे लगाने का समय है। इस बीच आप आदान की व्यवस्था कर सकते हैं। आप निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें।

- *इसकी जातियों से पंत मसूर 2639, जवाहर मसूर 1, शिवालिक, मलिक, जवाहर मसूर 3 तथा नूरी।*
- *बुआई समय 15 से 30 अक्टूबर असिंचित तथा 15 नवम्बर तक सिंचित।*
- *80 किलो डीएपी प्रति हेक्टर की दर से डालें।*
- *बीज बड़े दाने का 50–60 किलो तथा छोटे दानों का 40 किलो प्रति हेक्टर लगेगा।*
- *कतार से कतार 25–30 से.मी.।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050

नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

शक्ति आराधना का पर्व नवरात्रि

कलियुग में जगदम्बा दुर्गा और श्री गणेश ही प्रधान देव होंगे और यह प्रत्यक्ष दिख भी रहा है। जिस ऊर्जा और उत्साह से गणपति उत्सव एवं नवरात्रि मनाए जाते हैं, वैसे अन्य देव की तिथि, उत्सव या पर्व नहीं।

नए मूल्यों और मान्यताओं के हिसाब से भी ये समीचीन बैठता है, क्योंकि भगवती दुर्गा शक्ति की एवं श्री गणेश बुद्धि और युक्ति के देवता हैं और वर्तमान युग तकनीकी प्रतिभा, कौशल, बुद्धि, प्रयत्न सबसे यथासंभव अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त करने का है।

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य इस पावन पर्व के सर्वाधिक सदुपयोग, शक्ति संचय, पूजा-प्रार्थना के लिए दिखावे से बचने, कठिन अनुष्ठानों से यथासंभव बचने के लिए करने की चर्चा करने का है। ये काल है या दैव कि हमारे अमृत उत्सव अपने मूल अर्थों, नियमों, अनुष्ठानों से हटकर केवल व्यक्तिगत यश, दिखावे, अपव्यय, असंगत उत्सवों और शोर में बदल दिए गए हैं।

एक वजह तो स्पष्ट है कि ये सब बाजार का, मीडिया का दुष्कृत्य है कि जो मनुष्य की आस्था, भक्ति, भावना, परंपरा सबमें व्यवसाय और लाभ ढूंढ लेती है एवं लगातार भीड़ को इस भेड़चाल में चलने को बाध्य कर देता है।

देवी पूजा से कई तांत्रिक प्रयोग एवं अनुष्ठान जुड़े हैं, पर किसी समर्थ, अनुभवी जानकार मार्गदर्शक के इनसे जनसामान्य जितना दूर रहें, उतना लाभप्रद है। बिना विधि, निषेध, शुद्धिकरण, शापोद्धार, न्यास, कवच, कीलक, अर्गला, जप, पाठ, विधि, मंत्रोच्चारण, सामग्री, सुदिन, सुतिथि, मुहूर्त के साधे यह सब लाभ के स्थान पर हानिकारक भी हो सकते हैं।

फिर सनातन हिन्दू धर्म की एक सर्वकालिक व्यवस्था है कि शुद्ध हृदय से की गई छोटी से छोटी पूजा से भी अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त किया जा सकता है।

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि। मैं यज्ञों में सर्वश्रेष्ठ जपयज्ञ हूं।

ज्यादा अच्छा है हम इन अद्वितीय पर्वों पर शुद्ध हृदय से भगवती के कल्याण मंत्रों का जाप करें। दुर्गा सप्तशती की ही तरह लाभ देने वाली सप्त श्लोकों के दुर्गापाठ को प्राथमिकता दें। देवी के एक सौ आठ नामों का जप करें। देवी दुर्गा के बत्तीस नामों की माला का जप करें जिसकी फलश्रुति है कि कठिन से कठिन रोग, दुःख, विपत्ति और भय का नाश करने वाला यह अमोघ और अमृत प्रयोग हैं।

केवल संस्कृत मंत्र ही प्रभावी हो, ऐसा नहीं है। उन्हीं के समतुल्य प्रासादग्रंथ श्रीरामचरित मानस की कुछ चौपाइयां भी उतनी ही प्रभावशाली और चमत्कारी परिणाम देने वाली है।

श्रीरामचरित मानस की दिव्य चौपाइयां

1. देविपूजि पद कमल तुम्हारे, सुरनर मुनि सब होहिं सुखारे।
2. मोर मनोरथ मानहुं नीके, बसहु सदा उरपुर सबही के।
3. जय गजबदन षडानन माता, जगत जननि दामिनी दुति गाता।
4. अजा, अनादि शक्ति अविनाशिनी सदा शंभु अर्धंग निवासिनी

जगसंभव पालन कारिनी निज इच्छा लीला वपु धारिणी।

5. उद्भव स्थिति संहार कारिणिम क्लेश

हारिणिम सर्वश्रेयस्करीसीतां, न तोऽहं रामवल्लभाम।

मस्से से पायें छुटकारा

मस्से विषाणु संक्रमण से पैदा होते हैं। प्रायः मानव पेपिल्लोमैविरस् नामक विषाणु की कोई प्रजाति इसका कारण होती है। लगभग दस प्रकार के मस्से होते हैं। मस्से संक्रमण से हो सकते हैं और शरीर में वहाँ प्रवेश करते हैं जहाँ त्वचा कटी-फटी हो। प्रायः ये कुछ माह में स्वयं समाप्त हो जाते हैं किन्तु कभी-कभी वर्षों तक बने रह सकते हैं या पुनः हो सकते हैं। शरीर पर अनचाहे मस्सों के उग जाने से मन से बार-बार यही आवाज आती है कि इन मस्सों से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है। ये मस्से आपकी सुंदरता में धब्बा बन कर आपको परेशान कर रहे हैं तो इन आसान उपायों की सहायता से आप इनसे छुटकारा पा सकते हैं।

- रोज दो-तीन बार प्याज का लेप मस्सों पर करने से ये मस्से जड़ से खत्म हो जाएंगे। प्याज को काट कर मस्से पर घिसना भी लाभप्रद है।
- शरीर की त्वचा पर यदि छोटे-छोटे काले मस्से हो गए हों तो उन पर काजू के छिलकों का लेप लगाने से मस्से साफ हो जाते हैं।
- चूना और घी एक समान मात्रा में लेकर दोनों को खूब फेंटकर सुरक्षित रखें। उसे दिन में 3-4 बार मस्सों पर लगाएं। उससे मस्से जड़ से हट जाएंगे और दोबारा नहीं होंगे।
- सोडा कास्टिक 6 ग्राम को 250 ग्राम की बोतल में घोलकर सुरक्षित जगह पर रख दें। सावधानी से रूई की सहायता से मस्सों पर लगाएं। मस्सों को दूर करने के लिए यह रामबाण दवा है।
- बी काम्पलेक्स, विटामिन ए, सी, ई युक्त आहार के सेवन से मस्सों को दूर किया जा सकता है। मस्सों से छुटकारा पाने के लिए पोटेशियम बहुत लाभदायक है। पोटेशियम बहुत सी साग-सब्जी और फलों में पाया जाता है। जैसे सेब केला, अंगूर, आलू, मशरूम, टमाटर, पालक इत्यादि।
- खट्टी सेब का रस मस्सों पर लगाने से मस्सों के छोटे-छोटे टुकड़े होकर गिर जाएंगे।
- मुहासे या मस्से हों तो फिटकरी और काली मिर्च आधा-आधा ग्राम पानी में पीसकर मुहा पर मलने से लाभ होता है।
- बरगद के पेड़ के पत्तों का रस मस्सों के उपचार के लिए बहुत ही असरदार होता है। इस प्रयोग से त्वचा सौम्य हो जाती है और मस्से अपने आप गिर जाते हैं।
- एक चम्मच कोथमीर के रस में एक चुटकी हल्दी डालकर सेवन करने से मस्सों से राहत मिलती है।
- कच्चे आलू का एक स्लाइस नियमित रूप से दस मिनट तक मस्से पर लगाकर रखने से मस्सों से छुटकारा मिल जायेगा।
- मस्सा खत्म करने के लिए एक अगरबत्ती जला लें और अगरबत्ती के जले हुए गुल को मस्से का स्पर्श कर तुरन्त हटा लें। ऐसा 8-10 बार करें, इस उपाय से मस्सा सूखकर झड़ जाएगा।
- ताजा अंजीर लें। इसे कुचलकर-मसलकर इसकी कुछ मात्रा मस्से पर लगावें और 30 मिनिट तक लगा रहने दें फिर गरम पानी से धोलें। 3-4 हफ्ते में मस्से समाप्त होंगे।
- केले के छिलके को अंदर की तरफ से मस्से पर रखकर उसे एक पट्टी से बांध लें। और ऐसा दिन में दो बार करें और लगातार करते रहें जब तक कि मस्से ख़तम नहीं हो जाते।
- अरंडी का तेल नियमित रूप से मस्सों पर लगायें। इससे मस्से नरम पड़ जायेंगे, और धीरे धीरे गायब हो जायेंगे। अरंडी के तेल के बदले कपूर के तेल का भी प्रयोग कर सकते हैं।
- कलौंजी के कुछ दाने सिरके में पीस कर मस्सों पर लगा कर सो जाए कुछ दिनों में मस्से कट जायेंगे।

स्वास्थ्य/शिक्षण

मौसम परिवर्तन से बरतें सावधानी

बरसात के जाते ही खांसी-जुकाम होना सामान्य बात है। बच्चा हो या कोई बड़ा व्यक्ति, अगर बाहर से भीगकर आ रहा है और गीले कपड़ों में लगातार रहा है, तो उसे कॉमन फ्लू यानी खांसी-जुकाम हो सकता है।

- फ्लू के 3 मुख्य वायरस होते हैं। इनमें ए, बी और सी टाइप शामिल हैं। ए वायरस जानवरों और इंसान दोनों में और बी व सी वायरस सिर्फ इंसानों में होता है।
- सबसे खतरनाक टाइप ए वायरस होता है। अगर मरीज को कोई बीमारी है, तो टाइप बी भी गंभीर हो सकता है। सी कम खतरनाक होता है।
- ए और सी की चपेट में आने वाले ज्यादातर बच्चों में छींक आने, शरीर में दर्द, खांसी, नाक बहने और तेज बुखार के लक्षण नजर आते हैं, लेकिन टाइप सी से प्रभावित लोगों में लक्षण स्पष्ट नहीं दिखते।
- मौसम में बदलाव के समय टाइप सी ज्यादा सक्रिय होता है और 5-7 दिन में ज्यादातर लोग बिना दवा के भी ठीक हो जाते हैं।
- नाक से पानी बहे, गले में खारिश हो और पीली बलगम के साथ खांसी आए तो इसका मतलब है कि इंफेक्शन बैक्टीरियल है।
- सांस की नली के निचले भाग में इंफेक्शन होने पर तेज बुखार व शरीर में तेज दर्द होता है और बलगम ज्यादा बनती है। इसमें एंटीबैक्टीरियल ट्रीटमेंट दिया जाता है।
- सांस की नली के ऊपरी भाग में इंफेक्शन होने पर नाक बहती है। यह आमतौर पर वायरल होता है। इसमें एंटी एलर्जिक दवाएं दी जाती हैं।
- अगर सिर्फ गले में खराश है तो यह इंफेक्शन बैक्टीरियल होता है। इसमें भी एंटीबायोटिक्स दवाएं दी जाती हैं।
- बारिश में भीगने से बचें और पानी में देर तक न रहें।
- अगर भीग जाए तो कपड़े तुरंत बदलें और गीले सिर को तौलिए से पोंछकर सुखा लें।
- डॉक्टर से ही लक्षणों के हिसाब से ट्रीटमेंट लेना जरूरी है।

पाक्षिक पंचांग

22 सितम्बर से 5 अक्टूबर 2025
विक्रम संवत् 2082
आश्विन शुक्ल 1 से आश्विन शुक्ल 13 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार	
22	सितम्बर	सोम	आश्विन शुक्ल	1	नवरात्रारंभ
23	सितम्बर	मंगल	-----------	2	
24	सितम्बर	बुध	-----------	3	
25	सितम्बर	गुरु	-----------	4	विनायकी चतुर्थी व्रत
26	सितम्बर	शुक्र	-----------	4	
27	सितम्बर	शनि	-----------	5	
28	सितम्बर	रवि	-----------	6	
29	सितम्बर	सोम	-----------	7	सरस्वती आव्हान
30	सितम्बर	मंगल	-----------	8	महाष्टमी व्रत
1	अक्टूबर	बुध	-----------	9	दुर्गा नवमी व्रत
2	अक्टूबर	गुरु	-----------	10	विजयादशमी
3	अक्टूबर	शुक्र	-----------	11	पापांकुशा एकादशी पंचक 6.37 शाम से
4	अक्टूबर	शनि	-----------	12	प्रदोष व्रत, पंचक
5	अक्टूबर	रवि	-----------	13	पंचक

नैनो उर्वरक भविष्य में क्रान्तिकारी कदम : श्री राजपूत

खरगोन (कृषक जगत)। इफको ने कृषि एवं सहकारिता विभाग के मैदानी अमले हेतु नैनो उर्वरकों के बेहतर उपयोग पर संगोष्ठी का आयोजन किया। एक दिवसीय संगोष्ठी में उर्वरकों की नवीनतम तकनीक से अवगत कराना और उन्हें वैज्ञानिक पद्धति से खेती के लिए प्रोत्साहित करने पर विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपसंचालक कृषि श्री एस. एस. राजपूत ने अपने संबोधन में कहा कि नैनो उर्वरक भविष्य की खेती के लिए एक क्रांतिकारी कदम है साथ ही उनके द्वारा अश्वस्थ किया गया है की आगामी सीजन में नैनो उर्वरकों के उपयोग,प्रचार प्रसार एवं विक्रय हेतु विभाग का सम्पूर्ण सहयोग इफको को रहेगा। धार के इफको सहायक क्षेत्र प्रबंधक श्री विकास चौरसिया ने पीपीटी के माध्यम से नैनो यूरिया और नैनो डीएपी जैसे उर्वरक कम मात्रा में अधिक प्रभाव देते हैं, जिससे उत्पादन लागत घटती है और मिट्टी की उर्वरक क्षमता लंबे समय तक बनी रहती है। नैनो उर्वरक प्रयोग तकनीकी ज्ञान कृषि के मैदानी अमले से साझा किये ।

संगोष्ठी में कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञ डॉ. एस. के. त्यागी ने बताया एक बोतल नैनो यूरिया पारंपरिक यूरिया की एक बोरी के बराबर प्रभाव देता है। बायो फर्टिलाइज़र,बायो डीकंपोजर इत्यादि के प्रयोग से न केवल किसानों की आय बढ़ सकती है बल्कि पर्यावरणीय प्रदूषण भी कम होता है। उन्होंने किसानों को नैनो उर्वरकों के सही छिड़काव की तकनीक, मात्रा और समय के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इफको के उप महाप्रबंधक श्री पंकज अभयंकर द्वारा इफको का गठन,किए जाने वाले कार्य, संकट हरण बीमा योजना एवं इफको द्वारा चलाये जाने वाली ड्रोन तकनीकी की गतिविधियों पर बताया। कार्यक्रम को जिला विपणन अधिकारी श्री रोहित श्रीवास्तव, एमडी सहकारी बैंक श्रीमती संध्या रोकड़े एवं इफको के क्षेत्रीय अधिकरी श्री तुकेश कुमार मनाथे उपस्थित थे।

नरवाई न जलाने पर किसानों को जागरुक करें: श्री संजीव सिंह

भोपाल (कृषक जगत)। पर्यावरण के साथ मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनाए रखने के लिए नरवाई का प्रबंध आवश्यक है। इसके लिए हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर जैसे यंत्रों का उपयोग संभाग में किस प्रकार बढ़ाया जाए। जिससे नरवाई जलाने में विराम लगे। इसी विषय पर संभाग आयुक्त श्री संजीव सिंह ने संभाग के सभी कृषि महकमे से जुड़े अधिकारियों की बैठक ली। पिछले खरीफ/रबी सीजन में नरवाई जलाने की घटनाएं एवं आगामी सीजन में इसे रोकने की कार्ययोजना पर संभाग की संयुक्त संचालक कृषि श्रीमती सुमन प्रसाद एवं संभागीय कृषि यंत्री श्री कोठारी ने प्रजेंटेशन दिया। बैठक में नरवाई प्रबंधन पर किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा से अवगत कराया पिछले वर्ष जिन जिलों में सर्वाधिक नरवाई जलाने की घटनाएं हुई थी उन जिलों में एेक्शन प्लान बनाकर हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर का उपयोग बढ़ाएं एवं जहां मशीनरी कम है वहा किराए पर मशीनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये। आयुक्त ने नरवाई प्रबंधन पर अभी से प्रयास करने एवं किसानों को जागरूक करने हेतु प्रचार प्रसार, संगोष्ठी, प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों में उक्त यंत्रों का उपयोग बढ़ाया जाए। पिछले वर्ष रबी सीजन में संभाग के विदिशा में 4490, सीहोर में 2786, रायसेन में 2551, भोपाल में 1116 एवं राजगढ़ जिले में 543 नरवाई जलाने की घटनाएं दर्ज की गई थी। जबकि पिछले वर्ष खरीफ सीजन में सर्वाधिक घटनाएं रायसेन जिले में 824,सीहोर में 331, विदिशा में 222, भोपाल में 78 एवं राजगढ़ जिले में 4 घटनाएं दर्ज की गई थी। बैठक में सभी पांचों जिलों के कृषि एवं अन्य विभाग से जुड़े अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

कृषि विस्तार अधिकारी संघ ने सचिव को सौंपा पत्र

भोपाल (कृषक जगत)। मप्र कृषि विस्तार अधिकारी संघ ने कृषि सचिव श्री निशांत बरबड़े से भेंट कर उन्हें अधिकारियों की मांगों से अवगत कराया। संघ के संरक्षक श्री मनोहर गिरी के नेतृत्व में वर्तमान संघ के पदाधिकारियों ने बताया जिनमे विभिन्न मांगों में अधिकारियों को पदोन्नति,समयमान वेतनमान का लाभ, वेतन विसंगति को दूर कर उनका ग्रेड पे बढ़ाना, भत्तों में बढ़ोतरी, विदिशा जिले में कृषि विस्तार अधिकारियों के रुके वेतन बहाल करना आदि हैं, इन्हीं मांगों का पत्र सौंपा गया। कृषि सचिव श्री बरबड़े ने उपरोक्त विषयों को गंभीरता से लेते हुए उनके निराकरण की बात कही एवं शीघ्र डीपीसी बैठक कराने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर संघ के प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहन डामोर, महामंत्री श्री कुलदीप बैरागी,कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र मंडलोई उपस्थित थे।

कृभको खेती को लाभ का धंधा बनाने में प्रयासरत

जबलपुर (कृषक जगत)। कृषक भारती को-ऑपरेटिव लि. (कृभको) ने जबलपुर में विक्रेता संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस अवसर डॉ. राजीव कुमार उप महा प्रबंधक कृभको भोपाल, डॉ. एम. के. पालीवाल, पूर्व संयुक्त

संचालक कृषि विभाग, श्री डी. बी. सिंह सहकारिता विकास प्रकोष्ठ कृभको भोपाल, श्री अनूप मिश्रा क्षेत्रीय अधिकारी नोवानेसिस इंदौर एवं कृभको के मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर जिलों के अधिकृत विक्रेता तथा उप विक्रेता उपस्थित थे।

डॉ. राजीव ने अपने सम्बोधन में कृभको उत्पादों की जानकारी दी एवं कृभको द्वारा समय-समय पर नवीन उत्पादों को विपणन के क्षेत्र में किसानों की खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु प्रयासरत कहा। कृभको इस वर्ष राइजोसुपर, एनपीके कंसोर्टिया का प्रचार-प्रसार करके आज के समय में फसल पद्धति पर उपयोग के फायदे किसानों को खेतों में पहुंचकर बताएगी। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार श्री गौरव विश्नोई कृभको जबलपुर द्वारा किया।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।
कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222
पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत
भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952
सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

प्राकृतिक खेती के लिए कृषकों का हुआ चयन

भोपाल (कृषक जगत)। जिले में नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग योजना (प्राकृतिक खेती) अंतर्गत 1250 किसानों का चयन कर 10 क्लस्टर बनाए गए हैं। प्रत्येक क्लस्टर में दो कृषि सखियों को रखा गया है जिसमें किसानों को प्राकृतिक हेतु प्रशिक्षण दिया जाएगा एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और किसानों को रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से ब्लॉक स्तरीय मॉनिटरिंग टीम का गठन भी किया गया। परियोजना संचालक आत्मा श्रीमती सुमन प्रसाद के मार्गदर्शन में संचालित उक्त कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी पंचायत विभाग,कृषि विभाग के अधिकारी, तकनीकी विशेषज्ञ, पंचायत प्रतिनिधि, फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी एवं प्रगतिशील किसान शामिल किए। किसानों को प्राकृतिक खेती की तकनीकों जैसे बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र,अग्नि अस्त्र, बीज उपचार व मल्चिंग के प्रयोग हेतु प्रेरित किया जाएगा।

किसानों के खेतों का निरीक्षण, मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण शिविर आयोजित होंगे। प्राकृतिक खेती से उत्पादन लागत घटेगी, मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी और पर्यावरण का संरक्षण से वे अधिक सुरक्षित, टिकाऊ और लाभकारी खेती कर सकेंगे। उत्पादित अनाज व सब्ज़ियाँ भी अधिक स्वास्थ्यवर्धक होंगी।

तिलहनी फसलों के अधिक उत्पादन पर जोर

धार (कृषक जगत)। कृषि विभाग की महत्वाकांक्षी योजना राष्ट्रीय खाद्य तिलहन मिशन ऑन एडिवल ऑयल के विस्तार हेतु विभाग विकासखण्ड बार कृषकों को प्रशिक्षित कर रहा है। उप संचालक कृषि श्री ज्ञानसिंह मोहनिया के मार्गदर्शन में उक्त प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहे हैं। गत दिवस गंधवानी विकासखण्ड के कृषकों का एडिवल आयल योजनांतर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्र धार में किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने तिलहनी फसलों के अधिक उत्पादन की तकनीक बताई साथ ही सोयाबीन फसल की उन्नत तकनीकी, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती पर भी जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. एस. एस. चौहान वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, डॉ. अंकिता पांडेय, डॉ. मंडलोई,प्रशिक्षण के नोडल अधिकारी श्री दिलीप सिंह मौर्य सहायक संचालक कृषि, सेवानिवृत्त कृषि विभाग के विशेषज्ञ श्री आर. के. पाण्डेय सहित अन्य अधिकारी एवं कृषक उपस्थित थे।

म.प्र. में वर्षा की स्थिति (मि.मी. में) 1 जून से 19 सितम्बर 2025 तक

जिला	वास्तविक वर्षा	सामान्य वर्षा	सामान्य से अधिक या कम %	जिला	वास्तविक वर्षा	सामान्य वर्षा	सामान्य से अधिक या कम %
म.प्र.	**1102.2**	**914.0**	**21**	बैतूल	927.6	1000.0	–7
पूर्वी म.प्र.				भिंड	822.9	594.4	38
अनूपपुर	1007.4	956.7	5	भोपाल	1052.1	922.1	14
बालाघाट	1198.1	1191.8	1	बुरहानपुर	812.0	697.7	16
छतरपुर	1321.3	913.2	45	दतिया	850.4	721.2	18
छिंदवाड़ा	1054.9	959.0	10	देवास	835.8	864.0	–3
दमोह	1105.5	1057.4	5	धार	762.5	765.0	0
डिंडोरी	1235.6	1148.4	8	गुना	1657.1	910.5	82
जबलपुर	1127.6	1095.5	3	ग्वालियर	1185.0	696.5	70
कटनी	1057.2	915.5	15	हरदा	1067.0	1041.6	2
मंडला	1521.7	1162.3	31	इंदौर	831.0	821.0	1
नरसिंहपुर	1385.5	1014.6	37	झाबुआ	886.9	839.4	6
निवाड़ी	1326.0	757.6	75	खंडवा	718.4	786.5	–4
पन्ना	1171.6	1056.0	11	खरगौन	667.6	672.4	–1
रीवा	979.6	948.1	3	मंदसौर	849.3	800.3	6
सागर	1121.9	1030.5	9	मुरैना	938.6	630.6	49
सतना	1016.7	915.8	11	नर्मदापुरम	1325.8	1218.7	9
सिवनी	1257.5	981.7	28	नीमच	1046.2	753.2	38
शहडोल	1038.9	956.3	9	रायसेन	1499.2	1048.0	43
सीधी	1226.1	1003.6	22	राजगढ़	1364.9	862.2	58
सिंगरौली	1128.0	835.6	35	रतलाम	1205.0	876.4	37
टीकमगढ़	1353.4	883.8	53	सीहोर	974.6	1029.9	–5
उमरिया	1218.2	1041.3	17	शाजापुर	712.4	864.0	–18
उपसंभागीय वर्षा	**1177.7**	**1007.3**	**17**	श्योपुर	1435.5	653.5	120
पश्चिम म.प्र.				शिवपुरी	1386.3	767.1	81
आगर मालवा	972,8	826.9	13	उज्जैन	797.1	849.3	–6
अलीराजपुर	1134.8	822.5	38	विदिशा	1105.9	995.0	11
अशोकनगर	1406.8	820.5	71	**उपसंभागीय वर्षा**	**1044.2**	**842.4**	**24**
बड़वानी	726.4	621.5	17				

स्रोतः भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केन्द्र, भोपाल

एमरॉन एग्रो केमिकल्स के नाम पर अमानक उर्वरक विक्रय, एफआईआर दर्ज

नर्मदापुरम (कृषक जगत)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार जिले में अमानक खाद एवं उर्वरकों के विक्रय पर कठोर कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं। इन्हीं निर्देशों के तहत सिवनी मालवा स्थित राजपूत कृषि सेवा केंद्र के प्रोपराइटर हुकुम सिंह राजपूत के विरुद्ध अमानक उर्वरक के भंडारण और विक्रय करने पर पुलिस थाना सिवनी मालवा में प्राथमिकी दर्ज की गई है।

उर्वरक निरीक्षक डॉ. राजीव यादव द्वारा किए गए निरीक्षण में प्रतिष्ठान पर जिंक सल्फेट 33 प्रतिशत (निर्माता कंपनी-एमरॉन एग्रो केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड) का नमूना लिया गया। प्रयोगशाला जांच रिपोर्ट में पाया गया कि उक्त उर्वरक में जिंक 0 प्रतिशत एवं सल्फर 0 प्रतिशत है, जबकि पैकेट पर जिंक 33 प्रतिशत व सल्फर 15 प्रतिशत अंकित था।

निर्माता कंपनी ने उप संचालक कृषि को स्पष्ट किया कि पिछले 2-3 वर्षों से उन्होंने जिंक सल्फेट 33 प्रतिशत का न तो उत्पादन किया है और न ही मध्यप्रदेश में विक्रय किया है। इस पर शेष स्टॉक के भंडारण, क्रय-विक्रय एवं परिवहन पर तत्काल प्रतिबंध लगाया गया। सुनवाई के बाद आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर पुलिस थाना सिवनी मालवा में एफ.आई.आर. पंजीबद्ध की।

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो.** : 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि. ◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि. ◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ ◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया ◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोनः 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने पंजाब, हरियाणा में पेश किया नया कंबाइन हार्वेस्टर

फरीदाबाद (कृषक जगत)। देश की प्रसिद्ध कंपनी एस्कॉर्ट्स कुबोटा लि. ने पंजाब और हरियाणा में कुबोटा ब्रांड के तहत एक नया कंबाइन हार्वेस्टर 'PRO588i-G' प्रस्तुत किया है। इसकी खासियत यह है कि यह हार्वेस्टर फसल की डंठल को जड़ के पास से काटता है, (जैसा कि सामान्य फुल-फीड हार्वेस्टर नहीं कर पाते) जिससे पूरी लंबाई का पुआल इकट्ठा होता है। जिसे दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है। यह पुआल किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी का साधन है। इसका इस्तेमाल पशुचारे और बायोमास प्लांट्स में भी किया जाता है। भारत में कुबोटा की यह नई टेक्नोलॉजी किसानों को पराली जलाने की जगह एक फायदेमंद विकल्प देती है। साथ ही उत्तर भारत में वायु प्रदूषण कम करने में मदद करती है।

यह नया कंबाइन हार्वेस्टर जापान में बनी एक खास थ्रेशिंग टेक्नोलॉजी से युक्त है। यह टेक्नोलॉजी थ्रेशिंग के दौरान बासमती चावल के नाजुक और लंबे दानों के टूटने की समस्या (जो किसानों को सामान्य हार्वेस्टर्स में अक्सर होती है) को काफी हद तक कम करती है। दानों की गुणवत्ता बेहतर होने से उनका मूल्य बढ़ता है और निर्यात की संभावना भी ज्यादा होती है। 'PRO588i-G' का वजन सिर्फ 2700 किलो है, जबकि पारंपरिक हार्वेस्टर्स का वजन लगभग 9000 किलो होता है। कम वजन होने से खेत की मिट्टी कम दबती है, जिससे अगली फसल के लिए जुताई का काम आसान हो जाता है और किसानों का जमीन तैयार करने का खर्च भी घटता है। इसके अलावा, इसमें क्रॉलर लगा है, जिससे यह गीले खेतों में भी आसानी से काम कर सकता है। साथ ही इसका डिज़ाइन ऐसा है कि इसे चलाना आसान है और किसान लंबे समय तक आराम से काम कर सकते हैं।

श्री निखिल नंदा, चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने बताया कि 'एस्कॉर्ट्स कुबोटा में हम भारत के किसानों की जिंदगी को बेहतर बनाने वाली नई टेक्नोलॉजी लाने के लिए हमेशा समर्पित हैं। हमारा नया कुबोटा कंबाइन हार्वेस्टर इसी का सबूत है। जापान में बना यह कई खूबियों से लैस जहां एक तरफ हमारे अन्नदाताओं' की आमदनी बढ़ाने में मदद करेगा, वहीं दूसरी तरफ उत्तर भारत में वायु प्रदूषण की समस्या को कम करने में भी सहायक होगा।'

अकीरा काटो, डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर, एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने कहा कि 'नया कुबोटा कंबाइन हार्वेस्टर प्रस्तुत करना हमारे उस विज़न का हिस्सा है, जिसमें हम ऐसी नई टेक्नोलॉजी लाते हैं जो भारतीय कृषि में उन्नत बदलाव कर सकें। यह किसानों की उत्पादकता और आमदनी बढ़ाएगा। इसी के साथ-साथ प्रिसीजन फार्मिंग के जरिए स्थायी खेती के लक्ष्यों को भी पूरा करने में मदद करेगा।' इस नई मशीन से एस्कॉर्ट्स कुबोटा कृषि उपकरण उद्योग में अपनी सफलता को और मज़बूत करेगा।'

श्री राजन चुघ, चीफ ऑफिसर, एग्री सॉल्यूशंस बिज़नेस डिवीजन, एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने बताया कि 'PRO588i-G' कंबाइन हार्वेस्टर अपने वर्ग में देश की हार्वेस्टिंग टेक्नोलॉजी में काफी उन्नत है। धान की फसल के लिए एस्कॉर्ट्स कुबोटा पहले से ही विश्व-स्तरीय हार्वेस्टर्स और राइस ट्रांसप्लांटर्स के साथ अग्रणी है। इस नए उत्पाद के जुड़ने से हमारी स्थिति और भी मजबूत होगी।'

महिंद्रा ने ऑस्ट्रेलिया में ओजेए ट्रैक्टर की रेंज लॉन्च की

ब्रिस्बेन। वॉल्यूम के हिसाब से दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर निर्माता कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने ऑस्ट्रेलिया में अपनी नई पीढ़ी की OJA ट्रैक्टर रेंज लॉन्च की। ऑस्ट्रेलिया में 20 वर्षों की उपस्थिति के अवसर पर कंपनी ने OJA 1100 और 2100 सीरीज से तीन नए ट्रैक्टर मॉडल पेश किए हैं। ये सब-कॉम्पैक्ट और कॉम्पैक्ट कैटेगरी में आते हैं और विशेष रूप से ऑस्ट्रेलियाई किसानों की जरूरतों के अनुसार डिज़ाइन किए गए हैं। इनमें OJA 1123 HST (हाइड्रोस्टैटिक ट्रांसमिशन), OJA 1126 HST और शक्तिशाली OJA 2126 HST शामिल हैं।

ऑस्ट्रेलियाई परिस्थितियों के लिए मजबूत और विशेष रूप से बनाए गए ये ट्रैक्टर लंबे समय तक चलने, भरोसेमंद प्रदर्शन और ऑपरेटर की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए तैयार किए गए हैं। OJA रेंज किसान और भूमि मालिकों के लिए नए मानक स्थापित करती है। इसमें एर्गोनोमिक प्लेटफॉर्म, उन्नत तकनीक,शक्तिशाली इंजन और इस सेगमेंट में पहली बार बटन-ऑपरेटेड PTO और क्लास-लीडिंग लिफ्ट क्षमता वाला लोडर जैसी सुविधाएं हैं। नए महिंद्रा ट्रैक्टर डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले पैनल, एडवांस्ड हाइड्रोलिक्स, पावर स्टीयरिंग सिस्टम और वैकल्पिक केबिन कॉन्फ़िगरेशन जैसी सुविधाओं से लैस हैं, जो बेहतरीन आराम और नियंत्रण प्रदान करते हैं।

संस्कृत शब्द 'ओजस' (ऊर्जा का भंडार) से प्रेरित OJA महिंद्रा का सबसे महत्वाकांक्षी ग्लोबल लाइटवेट ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म है। इसे महिंद्रा रिसर्च वैली (भारत) और मित्सुबिशी महिंद्रा एग्रीकल्चर मशीनरी (जापान) की संयुक्त इंजीनियरिंग टीमों ने विकसित किया है। यह रेंज हल्के 4WD ट्रैक्टर डिजाइन में क्रांतिकारी बदलाव का प्रतीक है और ऑस्ट्रेलिया में खेती का स्वरूप बदलने वाली है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. के फार्म इक्विपमेंट बिजनेस के प्रेसिडेंट, श्री विजय नाकरा ने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया में महिंद्रा ब्रांड के 20 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए, हमें इस महत्वपूर्ण बाज़ार में विश्व स्तर पर प्रशंसित महिंद्रा ओजेए ट्रैक्टर रेंज पेश करते हुए गर्व हो रहा है। जापान की मित्सुबिशी महिंद्रा एग्रीकल्चर मशीनरी के साथ मिलकर विकसित किया गया यह प्लेटफॉर्म हमारी नवाचार, टिकाऊपन और ग्राहक-केंद्रित डिज़ाइन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विश्व स्तरीय तकनीक और इंजीनियरिंग के साथ, हमारा मानना है कि यह नई पेशकश ऑस्ट्रेलिया के उन किसानों और संपत्ति मालिकों को पसंद आएगी जो प्रदर्शन और विश्वसनीयता को महत्व देते हैं।'

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के ग्लोबल प्रोडक्ट प्लानिंग और इंटरनेशनल ऑपरेशंस (ASEAN और ROW) के प्रमुख, श्री रविन्द्र एस. शहाणे ने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया के लिए हम OJA 1100 और 2100 सीरीज के मॉडल सब-कॉम्पैक्ट और कॉम्पैक्ट कैटेगरी में लॉन्च कर रहे हैं। इन ट्रैक्टरों में सेगमेंट की पहली, स्मार्ट और बारीकी से विकसित की गई तकनीक हैं, जो बहुउद्देशीय उपयोग, ऑपरेटर आराम और आसान संचालन प्रदान करती हैं। यह रेंज विशेष रूप से छोटे भूमि मालिकों और आधुनिक जीवनशैली वाले उपयोगकर्ताओं के लिए उपयुक्त है।'

विभिन्न कृषि यंत्रों के लिए आवेदन आमंत्रित

इंदौर (कृषक जगत)। संचालनालय कृषि अभियांत्रिकी, मप्र, भोपाल द्वारा ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर, श्रेडर/मल्चर, बेलर, हे रेक/स्ट्रॉ रेक एवं स्लेशर यंत्रों के आवेदन दिनांक 16 सितम्बर 2025 से आमंत्रित किए जा रहे हैं । प्राप्त आवेदनों के आधार पर लक्ष्य निर्धारण किया जाएगा एवं पृथक से लॉटरी की सूचना प्रकाशित की जावेगी।

आवेदन के साथ कृषक स्वयं के बैंक खाते से निम्नलिखित राशि का डिमांड ड्राफ्ट (डीडी) संबंधित जिले के सहायक कृषि यंत्री के नाम से बनाकर जमा करना अनिवार्य होगा। धरोहर राशि के बिना आवेदन मान्य नहीं किया जायेगा।

कृषि यंत्र हैप्पी सीडर हेतु राशि रू. 4500/- का डिमांड ड्राफ्ट (डीडी)। कृषि यंत्र सुपर सीडर हेतु राशि रू. 4500/- का (डीडी)। कृषि यंत्र स्मार्ट सीडर हेतु राशि रू. 4500/- का (डीडी)। कृषि यंत्र श्रेडर/मल्चर हेतु राशि रू. 5500/- का (डीडी)। कृषि यंत्र बेलर हेतु राशि रू. 15000/- का (डीडी)। कृषि यंत्र हे रेक / स्ट्रॉ रेक हेतु राशि रू. 5000/- का (डीडी)। कृषि यंत्र स्लेशर हेतु राशि रू. 2000/- का (डीडी) लगाना अनिवार्य है।

पुराने और नए जीएसटी की गणना (तुलना)- कुछ प्रमुख कृषि मशीनरी एवं उपकरणों पर

क्र.सं	कृषि मशीनरी एवं उपकरण का नाम	कृषि मशीनरी एवं उपकरण की मूल कीमत (₹)	वर्तमान जीएसटी दर @ 12% (₹)	12% जीएसटी सहित कुल कीमत (₹)	आगामी संशोधित जीएसटी दर @ 5% (₹)	5% जीएसटी सहित कुल कीमत (₹)	बचत (₹)
1.	ट्रैक्टर 35 एचपी	5,80,000	69,600	6,50,000	29,000	6,09,000	**41,000**
2.	ट्रैक्टर 45 एचपी	6,43,000	77,160	7,20,000	32,150	6,75,000	**45,000**
3.	ट्रैक्टर 50 एचपी	7,59.000	91,080	8,50,000	37,950	7,97,000	**53,000**
4.	ट्रैक्टर 75 एचपी	8,93,000	1,07,160	10,00,000	44,650	9,37,000	**63,000**
5.	पावर टिलर 13 एचपी	1,69,643	20,357	1,90,000	8,482	1,78,125	**11,875**
6.	धान रोपण यंत्र (4 पंक्ति - वॉक बिहाइंड)	2,20,000	26,400	2,46,400	11,000	2,31,000	**15,400**
7.	बहुफसली थ्रेशर - 4 टन/घंटा क्षमता	2,00,000	24,000	2,24,000	1,0000	2,10,000	**14,000**
8.	पावर वीडर - 7.5 एचपी	78,500	9,420	87,920	3,925	82,425	**5,495**
9.	सीड कम फर्टिलाइज़र ड्रिल - 11 टाइन	1,50,000	18,000	1,68,000	7,500	1,57,500	**10,500**
10	सीड कम फर्टिलाइज़र ड्रिल - 13 टाइन	46,000	5,520	51,520	2,300	48,300	**3,220**
11	हार्वेस्टर कंबाइन	62,500	7,500.00	70,000	3,125.00	65,625	**4,375**
12	14 फीट कटर बार	26,78,571	3,21,428	30,00,000	1,33,928	28,12,500	**1,87,500**
13	स्ट्रॉ रीपर - 5 फीट	3,12,500	37,500.	3,50,000	15,625	3,28,125	**21,875**
14	सुपर सीडर - 8 फीट	2,41,071	28,928.57	2,70,000	12,053	2,53,125	**16,875**
15	हैप्पी सीडर - 10 टाइन	1,51,786	18,214	1,70,000	7,589.29	1,59,375	**10,625**
16	रोटावेटर - 6 फीट	1,11,607	13,392	1,25,000	5,580	1,17,187	**7,812**
17	स्क्वायर बेलर - 6 फीट	13,39,286	1,60,714	15,00,000	66,964	14,06,250	**93,750**
18	मल्चर - 8 फीट	1,65,179	19,821	1,85,000	8,258	1,73,437	**11,562**
19	न्यूमैटिक प्लांटर - 4 पंक्ति	4,68,750	56,250	5,25,000	23,437	4,92,187	**32,812**
20	ट्रैक्टर माउंटेड स्प्रेयर - 400 लीटर क्षमता	1,33,929	16,071	1,50,000	6,696	1,40,625	**9,375**

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार

कृषक जगत

अब किसानों को कृषि यंत्र मिलेंगे सस्ते : श्री चौहान

नई दरें 22 सितंबर से लागू होंगी, सिर्फ 5 प्रतिशत लगेगा जीएसटी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने घोषणा की कि अब कृषि यंत्रों पर जीएसटी की दरों को घटाकर सिर्फ 5 प्रतिशत कर दिया गया है, जो पहले 18 प्रतिशत और 12 प्रतिशत थी। यह नई दरें 22 सितंबर से लागू होंगी, जिससे देशभर के किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। श्री चौहान ने कहा कि सरकार का लक्ष्य किसानों की आमदनी को बढ़ाना है, और इसके लिए दो बातें बेहद जरूरी हैं उत्पादन बढ़ाना और उत्पादन की लागत कम करना। कृषि यंत्रीकरण (मशीनीकरण) इन दोनों में अहम भूमिका निभाता है। नई दिल्ली में हुई एक महत्वपूर्ण बैठक में ट्रैक्टर एवं कृषि यंत्रीकरण संघ (टीएमए), कृषि मशीनरी निर्माता संघ (एएमएमए), अखिल भारतीय कम्बाइन हार्वेस्टर निर्माता संघ (एआईसीएमए) तथा पावर टिलर एसोसिएशन ऑफ इंडिया (पीटीएआई) सहित अन्य संबंधित संगठनों के प्रतिनिधियों ने व्यक्तिगत और वर्चुअल माध्यम से भागीदारी की।

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि ट्रैक्टर 35 एचपी अब 41,000 रुपये सस्ता हो गया है। ट्रैक्टर 45 एचपी अब 45,000 रुपये सस्ता मिलेगा। वहीं ट्रैक्टर 50 एचपी पर 53,000 रुपये और ट्रैक्टर 75 एचपी पर 63,000 रुपये की बचत होगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बागवानी व निराई-गुड़ाई करने वाले छोटे ट्रैक्टर पर भी बचत होगी। छोटे से लेकर बड़े ट्रैक्टर्स पर जीएसटी दरों में कमी के बाद कीमत कम हो गई है। धान रोपण यंत्र (4 पंक्ति- वॉक बिहाइंड) पर 15,400 रुपये कम हो गए हैं। 4 टन प्रति घंटा क्षमता वाले बहुफसली थ्रेसर अब 14,000 रुपये सस्ता हो गया है।

मुख्य बातें एक नजर में

- ट्रैक्टर, थ्रेसर, हार्वेस्टर समेत कई मशीनें हजारों रुपये सस्ती होंगी
- किसानों की लागत घटेगी और आमदनी बढ़ेगी
- 3 अक्टूबर से शुरू होने वाले अभियान में भी किसानों को दी जाएगी जानकारी
- भविष्य में और अधिक सुधारों की तैयारी

श्री चौहान ने बताया कि पावर वीडर- 7.5 एचपी की कीमत अब 5,495 रुपये कम हो गई है। सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल- 11 टाइन अब 10,500 रुपये सस्ता मिलेगा। सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल - 13 टाइन 3,220 रुपये कम कीमत में मिलेगा। हार्वेस्टर कंबाइन पर अब 4,375 रुपये की बचत होगी। वहीं 14 फीट कटर बार का दाम सीधे-सीधे 1,87,500 रुपये कम हो गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि स्ट्रॉ रीपर- 5 फीट अब 21,875 रुपये सस्ता मिलेगा। सुपर सीडर- 8 फीट खरीदने पर 16,875 रुपये बचेंगे। हैप्पी सीडर- 10 टाइन 10,625 रुपये सस्ता हो गया है। रोटावेटर- 6 फीट खरीदने पर 7,812 रुपये की बचत होगी। स्क्वायर बेलर- 6 फीट पर 93,750 रुपये कम होंगे। मल्चर- 8 फीट पर 11,562 रुपये की बचत होगी। न्यूमैटिक प्लांटर- 4 पंक्ति 32,812 रुपये कम कीमत में मिलेगा। वहीं ट्रैक्टर माउंटेड स्प्रेयर- 400 लीटर क्षमता भी 9,375 रुपये सस्ता मिलेगा।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि रबी फसल के लिए शुरू होने जा रहे 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के दूसरे चरण के दौरान भी जीएसटी कम होने के लाभ की जानकारी किसानों तक पहुंचाने की कोशिश रहेगी।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि भविष्य में कृषि यंत्रीकरण को और मजबूत करने के लिए विशेष रूप से कदम उठाए जाएंगे। कृषि यंत्र निर्माता संघों के प्रतिनिधियों ने केंद्रीय कृषि मंत्री के दिशा-निर्देशों का निष्ठापूर्वक पालन करने और सम्मिलित रूप से किसान कल्याण के लिए कार्य करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। साथ ही जीएसटी सुधार के निर्णय का स्वागत करते हुए आभार भी व्यक्त किया। बैठक में कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी सहित मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहें।

(कृषि यंत्रों पर जीएसटी कटौती के पश्चात नई दरों की सूची पृष्ठ 15 पर देखें)

पूसा के शोधार्थियों को सफलता

अब कृषि विज्ञान के क्षेत्र में नए मानक स्थापित होंगे

भोपाल (कृषक जगत)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के पौध रोग विज्ञान एवं निमेटोलॉजी विभाग ने एक और उल्लेखनीय सफलता दर्ज की है। विभाग के बैच 2023-25 के कुल 11 शोधार्थियों ने वाइवा-वॉइस परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है। इनमें 8 विद्यार्थी पौध रोग विज्ञान और 3 विद्यार्थी नेमेटोलॉजी विषय से जुड़े हैं।

विभाग द्वारा आयोजित यह परीक्षा 27 अगस्त से 15 सितंबर 2025 तक चली। इस दौरान शोधार्थियों ने अपने-अपने शोध कार्यों का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्रस्तुतीकरण में शोध पद्धति, प्रायोगिक निष्कर्ष, नवाचार और व्यावहारिक समाधान पर गहन चर्चा की गई। मूल्यांकन के लिए विषय विशेषज्ञों और बाहरी परीक्षकों की उच्च स्तरीय समिति गठित की गई, जिसने शोधार्थियों की सैद्धांतिक समझ, शोध दृष्टि, नवाचार और विश्लेषणात्मक सोच का कठोर परीक्षण किया।

इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. एस.के. सिंह ने सफल शोधार्थियों को बधाई देते हुए विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे अपने शोध कार्यों को प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित करें और कृषि विज्ञान के क्षेत्र में नए मानक स्थापित करें।